mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-28 अंक-314 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

15 नवंबर 2024 शुक्रवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

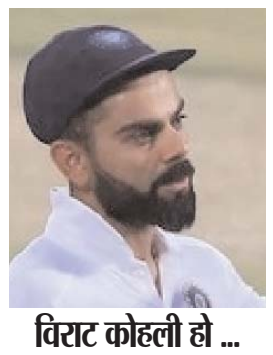

विराट कोहली हो ...

@ पेज 7

संक्षिप्त समाचार

पीएम मोदी को अब डोमिनिका देगा सर्वोच्च सम्मान

रोसेउ (एजेंसी)। कैरेबियाई देश डोमिनिका ने भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपना सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार- डोमिनिका अवॉर्ड ऑफ ऑनर देने की घोषणा की है। भारतीय प्रधानमंत्री को कोविड-19 महामारी के दौरान डोमिनिका की मदद करने के लिए यह पुरस्कार दिया जा रहा है। भारत ने फरवरी 2021 में डोमिनिका को एस्ट्राजेनेका कोविड-19 वैक्सीन के 70 हजार डोज भेजे थे। यह वैक्सीन डोमिनिका और उसके पड़ोसी अन्य कैरेबियाई देशों के काम आई थी। भारतीय प्रधानमंत्री के डोमिनिका के हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर में सहयोग के लिए यह अवॉर्ड दिया जा रहा है। डोमिनिका के राष्ट्रपति सिलवेनी बर्टन प्रधानमंत्री मोदी को गुयाना में भारत-कैरिकॉम समिट के दौरान यह पुरस्कार देंगे। मोदी 19 से 21 नवंबर के बीच गुयाना के दौरे पर रहेंगे।

'राहुल बाबा की मोहब्बत की दुकान में मिलता है बंटवारे का सामान

मुंबई (एजेंसी)। बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कांग्रेस पार्टी पर जबरदस्त प्रहार किया है। कर्नाटक सरकार के मंत्री द्वारा कुमारस्वामी पर दिए गए बयान का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि राहुल गांधी की मोहब्बत की दुकान में बंटवारे का सामान मिलता है। ऐसे लोगों को जवाब देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो वाली विचारधारा वाले लोग भारत में मौजूद हैं लेकिन हमें देश को मजबूत रखना है। एक स्वस्थ देश के लिए समय-समय पर अच्छी एंटी बायोटिक की जरूरत है। उन्होंने मुंबई में आयोजित इस कार्यक्रम में मौजूद लोगों के संबोधित करते हुए कहा कि 20 नवंबर को आपको ऐसी ही एंटी बायोटिक देनी है।

कोई हमें छेड़े तो फिर छोड़ेंगे नहीं: योगी

धनबाद (एजेंसी)। यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ गुरुवार को निरसा (धनबाद) पहुंचे। यहां आयोजित चुनावी सभा में योगी आदित्यनाथ ने कहा- अगर बंटेंगे तो कटेंगे। हमें तो एक रहना है। एक रहेंगे तो सेफ रहेंगे। इसके लिए भाजपा को लेकर आइए। यहां भ्रष्टाचारियों की कोई

जगह नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा- अटल बिहारी बाजपेई ने झारखंड का निर्माण किया था। उनका सपना था कि विकसित झारखंड बनाएंगे। झारखंड के नागरिकों को विकास की धारा से जोड़ेंगे। लेकिन पिछले 20 सालों में इसे बद से बदतर कर दिया गया। एक तरह नया भारत बन रहा है तो दूसरी ओर झारखंड पिछड़ रहा है।

संभाजी महाराज के हत्यारे को मसीहा मानते हैं कुछ लोग

मुंबई (एजेंसी)। पीएम नरेंद्र मोदी ने महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के प्रचार में विपक्ष पर जोरदार हमला बोला। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और सहयोगी दल अनुच्छेद 370 की बहाली चाहते हैं और कश्मीर के लिए अलग संविधान की योजना बना रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमने तो औरंगाबाद का नाम बदलकर छत्रपति संभाजीनगर किया और बालासाहेब ठाकरे की इच्छा पूरी की। पीएम मोदी ने कहा कि हमने हिंदुत्व की राजनीति से समझौता नहीं किया, जबकि कुछ लोगों ने अपना रास्ता ही बदल लिया है। उन्होंने कहा कि भाजपा के नेतृत्व वाली महायुति सरकार के गठन के बाद महाराष्ट्र में सबसे अधिक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश हुआ। यही नहीं एक और तीखा वार करते हुए

- महाराष्ट्र चुनाव में पीएम मोदी ने फिर चला औरंगजेब कार्ड

उन्होंने कहा कि कुछ लोग संभाजी महाराज के हत्यारे में अपना मसीहा देखते हैं। बता दें कि छत्रपति शिवाजी के बेटे संभाजी महाराज थे, जिनकी हत्या का आदेश औरंगजेब ने दिया था। यह भी एक कारण है कि महाराष्ट्र में शिवाजी बनाम औरंगजेब की राजनीति होती रही है। महाराष्ट्र में यह एक संवेदनशील विषय रहा है। इसके अलावा औरंगाबाद का क्षेत्र एक दौर में हैदराबाद स्टेट के तहत आता था, जिस पर निजाम का शासन था। ऐसे में यहां की राजनीति में ध्रुवीकरण की भी संभावनाएं रहती हैं। इस क्षेत्र में मुस्लिमों की बड़ी आबादी रहती है। छत्रपति संभाजी महाराज छत्रपति शिवाजी महाराज के उत्तराधिकारी थे। उस समय मराठों का सबसे प्रबल शत्रु मुगल शासक औरंगजेब था। बीजापुर और गोलकुण्डा का शासन हिंदुस्तान से समाप्त करने में उनकी प्रमुख भूमिका रही। संभाजी राजे अपनी शौर्यता के लिये प्रसिद्ध थे।

छात्रों के आगे झुका यूपी पीएससी, मान ली सभी शर्त

अब एक दिन और एक ही शिफ्ट में होगी पीसीएस की परीक्षा

प्रयागराज (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में छात्रों के प्रदर्शन के आगे यूपीपीएससी को झुकना पड़ा है। जानकारी के मुताबिक, यूपीपीएससी ने अपना

- छात्रों के प्रदर्शन के बाद यूपीपीएससी ने वापस लिया फैसला

फैसला वापस ले लिया है। ऐसे में यूपीपीएससी की ओर से होने वाली परीक्षा एक दिन और एक ही शिफ्ट में होगी। वहीं, आरओ-एआरओ की परीक्षा के लिए कमिटी बनाई गई है। बड़ी संख्या में छात्र इसको लेकर प्रयागराज में प्रदर्शन कर रहे थे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की पहल पर यूपीपीएससी ने यह बड़ा निर्णय लिया है। खबर के मुताबिक, प्रयागराज में छात्रों की मांग का सीएम योगी आदित्यनाथ ने संज्ञान लिया और आयोग को छात्रों के साथ संवाद कर और समन्वय बनाकर आवश्यक निर्णय लेने को कहा था। इसके बाद अपना फैसला बदलते हुए पीसीएस प्रारंभिक परीक्षा एक दिन में कराए जाने का निर्णय लिया है।

जेएमएम-कांग्रेस झारखंड को एटीएम बनाना चाहती हैं

गिरिडीह (एजेंसी)। झारखंड विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण के प्रचार को लेकर गुरुवार को केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने गिरिडीह में जनसभा की। इसमें उन्होंने एक बार फिर धारा 370, बांग्लादेशी घुसपैठ और भ्रष्टाचार को लेकर कांग्रेस-झामुमो सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा- हेमंत सरकार का समय समाप्त हो गया है। सुन लो घुसपैठियों अब तुम्हारा भी समय खत्म हो गया है। एक-एक को चुन कर बाहर करेंगे। कायदे से नहीं मानेंगे तो उल्टा लटकाकर सीधा करेंगे। शाह ने कहा- सोनिया गांधी ने राहुल गांधी को कई बार लॉच किया, हर बार फेल हो गईं। राहुल बाबा के प्लेन को 20 बार उड़ाया गया, लैंड नहीं कर पा रहा है। 21वीं बार भी बाबाधाम के एयरपोर्ट पर क्रैश हो जाएगा। उन्होंने कहा- कश्मीर भारत का है। इसे कोई नहीं ले सकता। आर्टिकल 370 अब नहीं हट सकता।

देश में 8 फीसदी आदिवासी लेकिन संसाधनों में सिर्फ 1 फीसदी हिस्सेदारी

राहुल बोले- मोदी ने संविधान नहीं पढ़ा, जल-जंगल-जमीन पर पहला हक उनका

मुंबई (एजेंसी)। राहुल ने गुरुवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कभी संविधान पढ़ा नहीं है, इसलिए उन्हें लगता है कि संविधान की लाल किताब खाली है। वे महाराष्ट्र के नंदुरबार में रैली को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान संविधान की प्रति दिखाते हुए उन्होंने कहा- भाजपा को किताब का लाल रंग पसंद नहीं, लेकिन हमें इसकी परवाह नहीं कि रंग लाल है या नीला। हम इसे (संविधान) बचाने के लिए अपनी जान भी देने को तैयार हैं। दरअसल, चुनाव प्रचार के दौरान भाजपा नेताओं ने राहुल गांधी द्वारा दिखाई जाने वाली लाल किताब को शहरी नक्सलवाद से जोड़ने

की कोशिश की थी। पीएम मोदी ने भी 9 नवंबर को तंज किया था कि राहुल गांधी संविधान की जो किताब लेकर घूम रहे हैं, उसके पन्ने खाली हैं।

राजस्थान में थप्पड़कांड के आरोपी नरेश मीणा गिरफ्तार

- टोंक में भारी आगजनी-पथराव, पुलिस की गाड़ियां रोकीं
- सुरक्षाबलों ने आंसू गैस के गोले दागे, समर्थकों को खदेड़ा

टोंक (एजेंसी)। राजस्थान के देवली-उनियारा में नरेश मीणा की गिरफ्तारी के बाद फिर बवाल शुरू हो गया है। मीणा के समर्थकों ने पुलिस की गाड़ियों को रोकने की कोशिश में चक्का-जाम कर दिया। देवली-उनियारा के समरावता गांव की सड़क पर भी टायर जलाए गए हैं। लोगों को खदेड़ने के लिए पुलिस ने आंसू गैस के गोले दागे हैं। उपद्रवियों ने भी पुलिस पर हल्का पथराव किया है। नरेश मीणा के समर्थकों ने टोंक से सवाई माधोपुर जाने वाले नेशनल हाईवे-116 पर भी अलीगढ़ कस्बे के पास जाम

लगा दिया है। कृषि मंत्री किरोड़ीलाल मीणा नरेश मीणा के समर्थकों से बात करने पहुंचे। इससे पहले करीब 12 बजे देवली-उनियारा विधानसभा के समरावता (टोंक) गांव से एसडीएम को थप्पड़ मारने वाले नरेश मीणा को गिरफ्तार किया गया था। दरअसल, समरावता (टोंक) गांव ने उपचुनाव में वोटिंग का बहिष्कार किया था। निर्दलीय प्रत्याशी नरेश मीणा भी ग्रामीणों के साथ धरने पर थे। इसी दौरान नरेश मीणा ने अधिकारियों पर जबरन मतदान करवाने का आरोप लगाया।

ईडी की महाराष्ट्र-गुजरात में 23 जगहों पर छापेमारी

- 170 बैंक ब्रांच की जांच, दावा-फर्जी केवायसी से अकाउंट खोले, इनसे 125 करोड़ रुपए का लेन-देन हुआ

मुंबई (एजेंसी)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने गुरुवार को मालेगांव के व्यापारी के खिलाफ मनी लॉन्ड्रिंग केस की जांच के तहत महाराष्ट्र और गुजरात में कई जगहों पर छापेमारी की। ईडी का दावा है कि व्यापारी ने 100 करोड़ रुपए से ज्यादा का लेन-देन करने के लिए कई लोगों के बैंक खातों का दुरुपयोग किया है। पीएमएलए के तहत हो रही इस कार्रवाई में महाराष्ट्र के मालेगांव, नासिक और मुंबई में और गुजरात के अहमदाबाद- सूरत में कुल 23 परिसरों की तलाशी ली जा रही है। छापेमारी महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, ओडिशा और पश्चिम बंगाल में 2,500 से ज्यादा लेन-देन और करीब 170 बैंक शाखाएं जांच के दायरे में हैं। इन खातों से या तो पैसा जमा किया गया या निकाला गया है।

पूर्व सांसद प्रज्ञा सिंह ठाकुर की बढ़ सकती हैं मुश्किलें

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई की एक स्पेशल कोर्ट ने भाजपा की पूर्व सांसद प्रज्ञा सिंह ठाकुर के खिलाफ 2008 के मालेगांव विस्फोट मामले नया जमानती वारंट जारी किया है। स्पेशल

कोर्ट ने यह वारंट इसलिए जारी किया है कि प्रज्ञा सिंह ठाकुर सुनवाई के दौरान उपस्थित नहीं हुई थीं। मालेगांव विस्फोट मामले में प्रज्ञा सिंह ठाकुर आरोपी हैं। स्पेशल कोर्ट ने यह कार्रवाई पूर्व में दिए गए आदेशों के बावजूद कोर्ट में बार-बार अनुस्थित रहने पर की है। ठाकुर कोर्ट के आदेश के बाद भी सुनवाई के दौरान उपस्थित नहीं हो रही थीं।

अब खड़गे और नाना पटोले के सामान की भी हुई चेकिंग

- शिंदे-अजित-अठावले समेत कई नेताओं की जांच हो चुकी, फडणवीस बोले-इसमें गलत क्या

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के मद्देनजर चुनाव आयोग के अधिकारियों ने गुरुवार को कांग्रेस के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे का बैग चेक किया। इसकी वीडियोग्राफी भी कराई गई। वे नासिक जिले में चुनाव प्रचार के लिए आए थे। महाराष्ट्र कांग्रेस अध्यक्ष नाना पटोले के हेलीकॉप्टर और बैग की आज चुनाव अधिकारियों ने जांच की। हेलीकॉप्टर की जांच तिरोड़ा हेलीपैड पर की गई। वे गोरेगांव विधानसभा सीट पर एनसीपी उम्मीदवार के लिए प्रचार करने जा रहे थे। वहीं, दूसरी तरफ कराड एयरपोर्ट पर गोवा के सीएम डॉ प्रमोद सावंत के

सामान की भी चेकिंग हुई। एक दिन पहले बुधवार को सीएम शिंदे की भी चेंकिग हुई थी। वे पालघर में चुनाव प्रचार करने पहुंचे थे।

महाराष्ट्र चुनाव

महाराष्ट्र में बीजेपी के चुनावी अभियान में आ रहा हिंदुत्व का तूफानी उबाल

लव, लैंड, वोट जिहाद और धारा 370 से होगा 'खेला'

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में इस महीने की 20 तारीख को होने जा रहे राज्य विधानसभा के चुनावों के मद्देनजर बीजेपी ने अपनी रणनीति में महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं, जिसमें हिंदुत्व के मुद्दों को प्रमुखता दी जा रही है। चुनावी प्रचार के दौरान पार्टी ने काटेंगे तो बताएंगे और एक हैं तो सुरक्षित हैं जैसे नारे शामिल किए हैं, जो मतदाताओं के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। बीजेपी अपने घोषणापत्र में धर्मांतरण विरोधी कानून का वादा करते हुए हिंदुत्व पर अपना रुख और मजबूत कर रही है। इसी बीच पार्टी किसानों को यह संदेश दे रही है कि कांग्रेस के शासन में उनकी जमीन वक्फ बोर्ड द्वारा ली जा सकती है। हाल ही में जम्मू-कश्मीर के विशेष दर्जे की बहाली की मांग करते हुए

विधानसभा में एक प्रस्ताव पारित किया गया, जिसने बीजेपी को अनुच्छेद 370 का मुद्दा उठाने का अवसर दिया है। बीजेपी के वरिष्ठ नेताओं ने कांग्रेस को स्वतंत्रता-पूर्व हैदराबाद के रजाकारों से जोड़ते हुए एक नई बहस छेड़ दी है। उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने भी एक वीडियो में एआईएम आईएम पर निशाना साधते हुए औरंगजेब और पाकिस्तान का जिक्र किया, जो आम तौर पर उनकी बयानबाजी से अलग है। पिछले कुछ महीनों से राज्य में सकल हिंदू समाज संगठन ने बीजेपी नेताओं के समर्थन से लव जिहाद विरोधी रैलियों का आयोजन किया है। जैसे-जैसे चुनाव करीब आ रहे हैं, भाजपा ने वोट जिहाद का मुद्दा भी उठाया है। मुंबई की वर्सोवा सीट पर फडणवीस ने लव जिहाद और भूमि जिहाद का मुकाबला धर्म युद्ध से किया जाना चाहिए का बयान देकर हिंदू वोटरों को अपने पक्ष में करने की कोशिश की। महा विकास अघाड़ी (एमवीए) की मराठा-मुस्लिम एकजुटता, कृषि संकट और जातिगत जनगणना जैसे मुद्दों पर बीजेपी का ध्यान भी है। पार्टी की इस रणनीति का एक प्रमुख कारण यह है कि 2024 के लोकसभा चुनाव में पार्टी को अपेक्षित सफलता नहीं मिली और उसे केवल 9 सीटें ही मिल पाई। बीजेपी का मानना है कि हिंदुत्व के मुद्दों पर सख्ती से प्रचार करने से वह अगले विधानसभा चुनाव में अच्छा प्रदर्शन कर सकती है।

मध्य रात्रि सिविल अस्पताल हजीरा का निरीक्षण करने पहुंचे ऊर्जा मंत्री तोमर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर वाकई में जनसेवक हैं। इसकी बानगी मंगलवार की मध्य रात्रि देखने को मिली, जब दिल्ली से ग्वालियर लौटेने के बाद ऊर्जा मंत्री अपने घर पहुंचने के बजाय सीधे पडाव से हजीरा तक बनने वाली सड़क निर्माण का कार्य देखने पहुंच गए, मध्य रात्रि को ही सिविल अस्पताल हजीरा का भी निरीक्षण किया। दरअसलमध्य रात्रि 2ः30 बजे का समय था, लेकिन जन-जन की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहने वाले ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ग्वालियर-15 विधानसभा क्षेत्र में चल रहे सड़क निर्माण कार्य की गुणवत्ता का निरीक्षण कर रहे थे। सच्चे जनसेवक की यही पहचान होती है। इस दौरान ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने न केवल निर्माण कार्य को देखा, बल्कि अधिकारियों को जरूरी निर्देश भी दिए। इस मौके पर ऊर्जा मंत्री ने बताया कि इस सड़क का निर्माण पूरा होने के बाद मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव और केंद्रीय संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया की मौजूदगी में लोकार्पण किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सड़क के निर्माण कार्य की रफ्तार में कमी नहीं आएगी। लंबे समय से कार्य में व्यवधान आ रहा था, लेकिन अब ऐसा नहीं होगा। उन्होंने कहा कि ग्वालियर बदल रहा है, इसका प्रमाण द्रुतगति से चल रहे विकास कार्य हैं। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर मंगलवार की मध्य रात्रि अचानक सिविल अस्पताल हजीरा पहुंच गए। किसी को भी उम्मीद नहीं थी कि इतनी रात गए मंत्री जी अस्पताल पहुंच जाएंगे। बहरहाल यहां उन्होंने कुछ कर्मचारियों से मरीज से संबंधित जानकारी ली। ऊर्जा मंत्री ने बच्चों के वार्ड में भी निरीक्षण किया और उनके साथ मौजूद उनकी माताओं से बच्चों के स्वास्थ्य और इलाज के बाबत जानकारी ली। ऊर्जा मंत्री ने अस्पताल की साफ-सफाई और अन्य सुविधाओं के बारे में पूछा। इस दौरान उन्होंने एक महिला से कहा कि हम सभी को इस अस्पताल को निजी अस्पताल से भी अच्छा बनाना है। इस दौरान अस्पताल में मौजूद मरीजों के परिजनों ने ऊर्जा मंत्री को सिविल अस्पताल में बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैय्या कराने के लिए धन्यवाद दिया। वहीं एक परिजन का कहना था कि उनके बच्चे को नियमित रूप से सुबह नाश्ता मिल रहा है। इस दौरान उनकी निगाह अस्पताल में लगी शिकायत पेटी पर भी गई, जिसे उन्होंने दुरुस्त करने के निर्देश दिए। ऊर्जा मंत्री ने बच्चों से बड़े दुलार के साथ बातचीत की, वहीं वयस्क मरीजों से इलाज और अस्पताल की सुविधाओं के बारे में जानकारी ली।

डेम से 3 बोट एवं एक पनडुब्बी जप्त

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की मंशाअनुरूप अवैध उत्खनन करने वालों के खिलाफ प्रदेश में निरंतर कार्रवाई की जा रही है। नीमच जिले के गाँधी सागर डेम के राजपुरा क्षेत्र में रेत का अवैध उत्खनन करने वालों के विरूद्ध कार्रवाई की गई। इसमें 3 बोट एवं एक पनडुब्बी जप्त की गयी एवं पानी के किनारे रेत छानने के लिये लगे हुए 3 छन्नों को भी नष्ट किया गया। कलेक्टर नीमच के निर्देश पर अवैध उत्खननकर्ताओं पर छापामार कार्रवाई करने के लिये जिला खनिज अधिकारी श्री आरिफ खान, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व मनासा श्री पवन बावरिया के नेतृत्व में सहायक खनिज अधिकारी श्री गजेन्द्र डाबर, तहसीलदार रामपुरा श्री मुकेश निगम, राजस्व निरीक्षक श्री अनुराग, हल्का पटवारी, कोटवार और होमगार्ड सैनिकों के साथ राजपुरा क्षेत्र में डेम में छापामार कार्रवाई की। जिला खनिज अधिकारी नीमच ने बताया कि जप्त की गयी नाव एवं पनडुब्बी को रामपुरा ले जाकर मत्स्य केन्द्र में रखा गया है। जप्त नावों, मशीनों एवं पनडुब्बी का कोई भी मालिक सामने नहीं आया है। प्रकरण में विवेचना कर कलेक्टर नीमच द्वारा अर्थदण्ड की कार्रवाई की जायेगी।

विभिन्न देशों के तकनीकी विशेषज्ञों ने जानी ग्लोबल स्किल्स पार्क की विशेषता

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। विभिन्न देशों के तकनीकी विशेषज्ञों ने संत शिरोमणि रविदास ग्लोबल स्किल्स पार्क भोपाल मे देखा हुनर को तराशना। ग्लोबल स्किल्स पार्क केवल देश मे ही नहीं विदेशों मे भी स्किल्स के क्षेत्र मे आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर का यह संस्थान देश के युवाओं को उद्योगों की मांग के अनुरूप अत्याधुनिक मशीनों में अंतर्राष्ट्रीय स्तर का प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। फिलीपिंस, थाईलैंड,पापुआ न्यू गिनी, नेपाल, श्रीलंका, म्यांमार,मंगोलिया, मालदीव, भूटान के राजनयिकों ने ग्लोबल स्किल्स पार्क का भ्रमण कर यहाँ पर संचालित हो रहे 9 एडवांस्ड कोर्सेज की लैब्स को देखा और इसको सराहा। यहां से प्रशिक्षित हर छात्र रोजगारोन्मुख हो रहा है। उन्होंने यहाँ कि पेड़गोजी एवं ट्रेनिंग को समझा और उनके देश के युवाओं को ग्लोबल स्किल्स पार्क की तर्ज पर किस प्रकार प्रशिक्षण दे सकते हैं, उस पर चर्चा की। वरिष्ठ संचालक श्री शमीमउद्दीन ने ग्लोबल स्किल्स पार्क में आने के लिए आभार व्यक्त किया।

आत्मा को परमात्मा से जोड़ने का माध्यम है संगीत - राज्य मंत्री लोधी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। संस्कृति, पर्यटन और धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री धर्मेंद्र भाव सिंह लोधी ने कहा है कि दार्शनिक और आध्यात्मिक परम्परा में संगीत का बहुत महत्व है। संगीत हमारी परम्परा का अभिन्न अंग है। यह आत्मा को परमात्मा से जोड़ने का माध्यम है। संगीत की उत्पत्ति ब्रह्म जी ने की थी। उन्होंने इसका ज्ञान शिव जी को, शिव जी ने सरस्वती जी को, सरस्वती जी ने नारद जी को और फिर गंधर्व और अप्सराओं को संगीत का ज्ञान प्राप्त हुआ। राज्य मंत्री श्री लोधी भारत भवन के अंतरंग सभागार में पं. नन्द किशोर शर्मा स्मृति समारोह के शुभारंभ कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री लोधी ने कहा कि वेद हमारी संस्कृति और परम्परा के आधार हैं, जिसमें सामवेद संगीत को समर्पित है। ईश्वर की उपासना का सबसे सरल माध्यम संगीत है। संगीत के सातों स्वर वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित हैं। प. नंदकिशोर शर्मा का नाम अनहद के आकाश में प्रकाश की तरह है, जो कई पीढ़ियों को प्रकाशवान करेगा। वे संगीत के सच्चे साधक थे, जिन्होंने संपूर्ण जीवन संगीत को समर्पित कर दिया। राज्य मंत्री श्री लोधी ने संगीत को समर्पित महान विभूति श्री नन्द किशोर शर्मा को नमन किया।

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग के लिए उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत एवं कला अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, भोपाल द्वारा सुप्रसिद्ध संगीतकार पं. नन्दकिशोर शर्मा की स्मृति में दो दिवसीय भारतीय शास्त्रीय गायन, वादन और नृत्य पर केन्द्रित कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम में संचालक संस्कृति श्री एन.पी. नामदेव और अकादमी की निदेशक सुश्री वंदना पाण्डेय भी विशेष रूप से उपस्थित रही। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन कर पारम्परिक तरीके से किया गया। इस अवसर पर पं. नंदकिशोर शर्मा के भाई श्री गौरीशंकर शर्मा का विशेष रूप से स्वागत व सम्मान किया गया।

कार्यक्रम की पहली प्रस्तुति परम्परागत रूप से श्री अनूप शर्मा के निर्देशन में अनुश्रुति वृन्द के कलाकारों द्वारा वंदना प्रस्तुत कर की गई, जिसकी रचना पं. नन्दकिशोर शर्मा ने की थी। सर्वप्रथम सरस्वती वंदना मां शारदे वर दे हमें तेरे चरण का प्यार दे थी और इसके बाद गुरु वंदना गुरु देव शत-शत करूं चरण वंदन प्रस्तुत कर श्रोताओं को आत्मविभोर कर दिया।

कुख्यात वन्य-जीव तस्कर को प्रोडक्शन वारंट पर वन विभाग तमिलनाडु को सौंपा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रधान मुख्य वन संरक्षक वन्य-जीव एसटीएसएफ मध्यप्रदेश भोपाल ने बताया कि कुख्यात वन्य जीव तस्कर एवं शिकारी पुजारी सिंह बावरिया को न्यायालय उडानमंडलम तमिलनाडु द्वारा जारी प्रोडक्शन वारंट के आधार पर न्यायालय नर्मदापुरम मध्यप्रदेश की अनुमति के बाद तमिलनाडु के समकक्ष अधिकारियों को सौंप दिया गया हे। प्रधान मुख्य वन संरक्षक वन्य-जीव एसटीएसएफ मध्यप्रदेश भोपाल ने बताया कि स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स मध्यप्रदेश द्वारा वन्य-जीव अपराध नियंत्रण ब्यूरो नई दिल्ली से प्राप्त अलर्ट एवं मुखबिर की सूचना के आधार पर 18 अगस्त, 2023 को अंतर्राष्ट्रीय कुख्यात वन्य-जीव तस्कर आदिन सिंह उर्फ कल्ला बावरिया को बाघ एवं पेंगोलिन के अवयवों के साथ गिरफ्तार किया था। उसके द्वारा दी गई जानकारी के आधार पर अन्य आरोपी पुजारी सिंह वल्द राम कुमार सिंह बावरिया निवासी होशियारपुर पंजाब को गिरफ्तार किया गया था। उक्त दोनों अपराधियों के विरुद्ध महाराष्ट्र एवं तमिलनाडु राज्य में वन्य-प्राणी बाघ के शिकार एवं उसके अवयवों के अवैध व्यापार के संबंध में प्रकरण दर्ज है। नीलगिरी वन मण्डल तमिलनाडु दल द्वारा केन्द्रीय जेल नर्मदापुरम से आरोपी पुजारी सिंह बावरिया को नीलगिरी वन मण्डल में बाघ के शिकार एवं उसके अवयवों के अवैध व्यापार में दर्ज प्रकरण में 11 नवम्बर, 2024 को न्यायालय नर्मदापुरम की अनुमति के उपरांत एसटीएसएफ के सहयोग से तमिलनाडु भेजा गया है। आरोपी को विगत कई वर्षों से अन्य प्रदेशों के वन विभाग एवं अन्य कानून प्रवर्तन संस्थाएँ तलाश रही थीं। प्रकरण में विवेचना जारी है। प्रधान मुख्य वन संरक्षक वन्य-जीव एसटीएसएफ मध्यप्रदेश भोपाल ने बताया कि स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स द्वारा प्रकरण में की गयी सटीक विवेचना के आधार पर प्रकरण में शामिल आरोपी पुजारी सिंह की जमानत याचिका उच्च न्यायालय जबलपुर द्वारा विस्तृत सुनवाई उपरांत खारिज की गयी है।

महाविद्यालयों में 15 नवंबर को होगा पुष्पांजलि कार्यक्रम

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार ने बुधवार को मंत्रालय में जनजातीय गौरव दिवस के उपलक्ष्य पर विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में विभिन्न कार्यकम आयोजनों की रूपरेखा तैयार करने के लिए बैठक लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिये।

मंत्री श्री परमार ने महान जनजातीय गौरव एवं स्वाधीनता नायक भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के अवसर पर 15 नवंबर को शहडोल में आयोजित होने वाले समारोह में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के संबोधन का सीधा प्रसारण एवं पुष्पांजलि कार्यक्रम, प्रदेश के समस्त विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में आयोजित करने के निर्देश दिए। श्री परमार ने कहा कि जनजातियों के गौरवशाली इतिहास एवं पुरुषार्थ को सही परिप्रेक्ष्य में समझने की आवश्यकता है।

श्री परमार ने कहा कि जनजातीय महापुरुषों एवं नायकों का बलिदान, इतिहास और पुरुषार्थ को सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में कार्यक्रम आयोजन से विद्यार्थियों में जनजाति के गौरवशाली इतिहास, पुरुषार्थ एवं उपलब्धियों पर गर्व का भाव जागृत होगा। जनजाति के राष्ट्रीय एवं सामाजिक महत्व को समझने का अवसर मिलेगा।

देव उठनी एकादशी पर नर्मदा उद्गम अमरकंटक के रामघाट पर प्रज्ज्वलित किए 11 हजार दीप

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। देव उठनी एकादशी के पावन पर्व पर मां नर्मदा की उद्गम स्थली पवित्र नगरी अमरकंटक में संत मण्डल द्वारा 11 हजार दीपदान, पंच महाआरती, भजन संध्या सहित सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अमरकंटक के इतिहास में संत मंडल के नेतृत्व एवं जन-सहभागिता से आध्यात्मिक, धार्मिक, सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भव्य एवं मंत्रमुग्ध करने वाला था। कलेक्टर श्री हर्षल पंचोली सपत्नीक आयोजन में मुख्य यजमान के रुप में शामिल हुए। कार्यक्रम में अमरकंटक, पेण्ड्रा, राजेन्द्रग्राम, अनूपपुर,कोतमा, बिजुरी, डिण्डोरी, बुढार, शहडोल के लोगों ने भी बढ चढ कर हिस्सा लिया।

देवउठनी एकादशी-तुलसी विवाह अवसर पर अमरकंटक संत मण्डल द्वारा नर्मदा उद्गम के रामघाट के दक्षिण तट पर 11 हजार दीप प्रज्ज्वलित किए गए। श्रद्धालुओं द्वारा रामघाट को रंगोली, पुष्पमाला, रंगीन बिजली की लाईट से सजावट कर कार्यक्रम को अत्यंत मनोहारी बनाया गया था। शायं 5 बजे से शुरु हुआ कार्यक्रम रात्रि 9 बजे तक चला।

दीपदान और पंच आरती से पूर्व भजन कीर्तन , वैदिक मंत्रोच्चारण कर नर्मदाष्टक से नर्मदा मैया की विधिवत पूजा-अर्चना की गयी। मृत्युंजय आश्रम के वेदपाठी शिष्यों द्वारा सस्वर पाठ किया गया। इसके पश्चात नर्मदा तट के रामघाट पर 11 हजार दीप प्रज्ज्वलन के साथ दीपदान करते हुए काशी के आचार्यों द्वारा पंच महाआरती की गयी।

अमरकंटक संत मंडल के द्वारा आयोजित दीपोत्सव कार्यक्रम में मां कल्याणिका पब्लिक स्कूल पेंड्रा रोड, कल्याणिका केन्द्रीय शिक्षा निकेतन विद्यालय अमरकंटक, सरस्वती शिशु उच्च माध्यमिक विद्यालय अमरकंटक एवं शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अमरकंटक के छात्र-छात्राओं ने कला का प्रदर्शन कर लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

लोकमाता अहिल्या बाई की 300वीं जन्म जयंती पर महेश्वर में तीन दिवसीय निमाड़ उत्सव का आयोजन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश का ऐतिहासिक एवं गौरवशाली प्रसिद्ध पर्यटन स्थल महेश्वर में लोकमाता अहिल्या बाई की 300वीं जन्म जयंती पर कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर 15 नवम्बर से 17 नवम्बर तक निमाड़ उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। आयोजन को भव्य बनाने एवं इसमें अधिक से अधिक लोगों की सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए सभी आवश्यक तैयारियां की जा रही है। तीन दिवसीय निमाड़ उत्सव के दौरान प्रतिदिन सांय 07 बजे से सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। प्रतिदिन प्रातः 8ः30 बजे से नर्मदा रिसोर्ट सभागार में संगोष्ठी का आयोजन होगा। तीन दिवसीय निमाड़ उत्सव का शुभारंभ 15 नवंबर को उज्जैन के श्री दिनेश शर्मा एवं सुप्रसिद्ध पार्श्व गायक श्री सुदेश भोसले द्वारा मां नर्मदा की सांगीतिक आरती के साथ होगा। इस दौरान सांयकाल में सुगम संगीत की प्रस्तुति मुम्बई के सुप्रसिद्ध पार्श्व गायक श्री सुदेश भोसले एवं उनकी साथियों द्वारा दी जाएगी। दूसरे दिन 16 नवंबर को सायं 7 बजे निमाड़ गायन अंतर्गत लोककण्ठ की प्रस्तुति मनीषा शास्त्री, राखी बांके, सोनाली ढाकसे, विकास शुक्ला एवं साथी कलाकारों द्वारा दी जाएगी। गणगौर नृत्य की प्रस्तुति खण्डवा की साधना उपाध्याय एवं साथियों द्वारा, बैगा जनजाति के करमा नृत्य की प्रस्तुति डिण्डोरी के दयाराम एवं साथियों द्वारा, छाऊ नृत्य की प्रस्तुति रांची की सृष्टिघर महतो एवं साथी कलाकारों द्वारा, भांगड़ा और मलवाई गिद्दा नृत्य की प्रस्तुति पटियाला के मनेन्द्र सिंह एवं साथी कलाकारों द्वारा और गोटीपुआ नृत्य की प्रस्तुति उड़ीसा की चन्द्रमणि प्रधान व साथी कलाकारों द्वारा दी जाएगी।

इसी प्रकार 17 नवंबर को काठी नृत्य की प्रस्तुति हरसूद के रामदास साकल्ले एवं साथियों द्वारा, गुटुमबाजा नृत्य की प्रस्तुति डिण्डोरी के लेखपाल धुर्वे एवं साथियों द्वारा दी जाएगी।

उज्जैन सिंहस्थ महाकुंभ-2028 के शांतिपूर्ण आयोजन के लिए डीजीपी ने ली वृहद बैठक

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उज्जैन में सिंहस्थ महाकुंभ-2028 के शांति एवं गरिमापूर्ण आयोजन के लिए मध्यप्रदेश पुलिस की तैयारियां गति पकड़ रही हैं। पुलिस महानिदेशक श्री सुधीर सक्सेना ने बुधवार 13 नवंबर को पुलिस मुख्यालय भोपाल में वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों के साथ वृहद बैठक कर कार्ययोजना पर विस्तार से चर्चा की। बैठक में उज्जैन आईजी तथा एसपी भी उपस्थित रहे।

बैठक में विशेष रूप से श्री सरबजीत सिंह सेवानिवृत्त विशेष पुलिस महानिदेशक जो सिंहस्थ-2004 में आईजी उज्जैन तथा सिंहस्थ 2016 में विशेष पुलिस महानिदेशक इंटेलीजेंस के पद पर रहे तथा

श्री उपेन्द्र जैन विशेष पुलिस महानिदेशक जो सिंहस्थ-2004 में उज्जैन एसपी रहे और श्री मनोहर वर्मा सेवानिवृत्त आईपीएस जो सिंहस्थ-2016 में एसपी उज्जैन रहे, ने अपने अनुभव साझा किए।

डीजीपी श्री सक्सेना ने कहा कि उज्जैन में होने वाला सिंहस्थ महाकुंभ - 2028 विश्व का सबसे वृहद धार्मिक - सांस्कृतिक आयोजन होगा। करोड़ों की संख्या में श्रद्धालुओं तथा पर्यटकों का आगमन इस दौरान होगा। अतः सुव्यवस्थित यातायात और सुरक्षा के इंतजाम भी इसके अनुकूल हों। उन्होंने कहा कि क्राउड कंट्रोल और क्राउड मैनेजमेंट सिस्टम बहुत ही सुदृढ़ होना चाहिए। क्राइम कंट्रोल, एंटी नेशनल एलिमेंट कंट्रोल तथा टेरेरिस्ट गतिविधियों पर सजग निगाहें रखना जरूरी है। साथ ही सुरक्षा व्यवस्था में लगे सभी व्यक्तियों की परस्पर संचार व्यवस्था तथा अन्य विभागों से भी अच्छा सम्पर्क और समन्वय होना अत्यावश्यक है। ड्रोन कैमरों तथा सीसीटीवी कैमरों की पर्याप्त व्यवस्था और 24×7 मॉनीटरिंग हेतु डेडिकेटेड कार्मिक होना बहुत जरुरी है। डीजीपी श्री सक्सेना ने बैठक में इन बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की।

इस बार सिंहस्थ में सुरक्षा के व्यापक इंतजाम किए जाएं। मेले की सुरक्षा के लिए सीसीटीवी कैमरे, ड्रोन, और फेस रिकग्निशन तकनीक का उपयोग किया जाए।

जंगल सफारी भ्रमण और वन्य जीवों को देखकर बच्चे हुए खुश

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पेंच नेशनल पार्क सिवनी में राज्य स्तरीय मोगली उत्सव के दूसरे दिन स्कूल के बच्चों ने जंगल सफारी के दौरान वन का भ्रमण किया और वन्य जीवों को देखा। उनके साथ वन विभाग के गाइड और शिक्षक भी साथ थे। स्कूल शिक्षा विभाग प्रतिवर्ष वन विभाग के साथ मिलकर मोगली उत्सव का आयोजन करता है। बच्चों के सर्वांगीण विकास, वन, पर्यावरण, वन्य-जीव संरक्षण की जानकारी बच्चों को देना इस कार्यक्रम का उद्देश्य है। मोगली उत्सव में बच्चों की चित्रकला, प्रश्न-मंच और सांस्कृतिक क्षेत्र से जुड़ी गतिविधियाँ भी करायी जाती हैं। मोगली उत्सव का शुभारंभ सोमवार को हुआ। सिवनी विधायक श्री दिनेश राय ने प्रातः 5 बजे हरी झण्डी दिखाकर प्रदेश के सभी जिलों से आये मोगली मित्र बच्चों को सफारी के लिये रवाना किया।

समारोह में 242 बच्चे, 58 शिक्षक और 12 स्वयंसेवी कार्यकर्ता सहभागिता कर रहे हैं। बच्चों को इस दौरान जैव-विविधता की भी जानकारी दी गयी। विभिन्न प्रतियोगिता में शामिल होने वाले बच्चे श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिये पुरस्कृत किये जायेंगे। प्रदेश में मोगली उत्सव की शुरूआत शाला स्तर, विकासखण्ड स्तर और जिला स्तर पर होती है। कार्यक्रम में 55 जिलों से आये विद्यार्थी एवं शिक्षक अपनी सक्रिय सहभागिता कर रहे हैं। मोगली उत्सव में राज्य जैव-विविधता बोर्ड, पर्यावरण नियोजन समन्वय एवं संगठन (एप्को), स्काउट गाइड और मध्यप्रदेश पाठ्य-पुस्तक निगम आयोजन में मदद करते हैं। पर्यावरण क्लिज प्रतियोगिता एवं मिशन लाइफ आधारित लघु प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। कनिष्ठ वर्ग एवं वरिष्ठ वर्ग के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की लिखित परीक्षा का आयोजन किया गया, जिसमें प्रथम 5 जिलों के 2-2 प्रतिभागियों का चयन किया गया। चयनित विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिये मल्टी-मीडिया क्विज का आयोजन भी किया गया, जिसमें पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन, ओजोन संरक्षण, प्रदूषण जैसे महत्वपूर्ण विषय पर रोचक प्रश्नों के माध्यम से विद्यार्थियों ने अपनी सहभागिता दी। सभी विजयी विद्यार्थियों को एप्को भोपाल द्वारा ऊर्जा दक्ष सोलर उत्पाद, जिसमें सोलर लालटेन, लैम्प एवं टेबल लैम्प, सोलर पैनल चार्जिंग दिये गये। जनजाति समुदाय द्वारा निर्मित उत्पादों को बढ़ावा देने के लिये पुरस्कार और प्रमाण-पत्र दिये गये।

बिरसा मुंडा जयंती समारोह में वर्चुअली जुड़ेंगे पीएम मोदी, सीएम और राज्यपाल भी होंगे शामिल

मीडिया ऑडीटर, शहडोल निप्र। शहडोल के बाणगंगा मेला मैदान पर शुक्रवार को राज्य स्तरीय जनजातीय गौरव दिवस समारोह होगा। इसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी वर्चुअली संबोधित करेंगे। इसके पहले पीएम लालपुर के पकरिया गांव पहुंचे थे, वहां उन्होंने जनजातीय समुदाय के साथ संवाद कर भोजन किया था। यह दूसरा मौका होगा, जब पीएम शहडोल के जनजातीय समुदाय के माध्यम से देश को संबोधित करेंगे।

वहीं राज्यपाल मंगुभाई पटेल और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल भी मुख्य रूप से शामिल होंगे। कार्यक्रम के दौरान 229.66 करोड़ रुपए की लागत से 76 विभिन्न विकास कार्यों का भूमि पूजन और लोकार्पण किया जाएगा, जिसमें 68.15 करोड़ रुपए की लागत से 33 विकास कार्यों का लोकार्पण और 161.51 करोड़ रुपए की लागत के 43 विकास कार्यों का भूमि पूजन करेंगे, वहीं हितग्राहियों को मसूर किट वितरण, पीएम किसान, सीएम किसान, आहार अनुदान, निःशुल्क साइकिल वितरण, मोटराइज्ड ट्राइसिकल, सीसीएल (कैश क्रेडिट लिमिट), मुद्रा लोन, आयुष्मान कार्ड, वन धन योजना आदि दिया जाएगा।

आदिवासी नृत्यों की होगी प्रस्तुतिः कलेक्टर केदार सिंह ने बताया कि राज्य स्तरीय जनजातीय गौरव दिवस समारोह में पारंपरिक लोक नृत्यों गुदुम्ब, शैला, करमा, रीना नृत्यों की प्रस्तुतियां दी जाएंगी। इसके लिए डिंडौरी, अनूपपुर, मंडला समेत प्रदेश के आदिवासी बहुल जिलों से आदिवासी के कलाकार प्रस्तुति देंगे।

विभागों की लगेगी प्रदर्शनीः कलेक्टर ने बताया कि स्तरीय जनजातीय गौरव दिवस समारोह में महिला बाल विकास विभाग, वन विभाग, शिक्षा एवं ट्राइबल विभाग, आजीविका मिशन, हथकरघा विभाग, कृषि विभाग, उद्यानिकी विभाग सहित अन्य विभाग योजनाओं से संबंधित प्रदर्शनी लगाएंगे।

सुबह 10.20 पहुंचेंगे सीएमः मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 15 नवम्बर की सुबह 10:20 बजे शहडोल के जमुई हेलिपैड पहुंचेंगे। वहां से कार के जरिये जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम स्थल पहुंचेंगे। दोपहर 1:40 बजे जबलपुर एयरपोर्ट के लिए प्रस्थान कर जाएंगे। कार्यक्रम में 50 हजार लोगों के पहुंचने की उम्मीद है। इसके लिए इसके लिए शहडोल, उमरिया और अनूपपुर से करीब 1200 बसों को अधिगृहीत किया गया है। कार्यक्रम में सुरक्षा व्यवस्था के लिए तीनों जिले से करीब 1000 पुलिस बल तैनात किया गया है।

वार्षिक निरीक्षण में भुइमाड़ थाना पहुचे पुलिस कप्तान, दिये दिशा निर्देश

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। पुलिस अधीक्षक डॉ.रविंद्र वर्मा द्वारा गुरूवार को वर्ष भर में किये गये कार्यो का लेखा जोखा लेने के उद्देश्य से वार्षिक निरीक्षण पर थाना भुइमाड़ पहुंचे। जहॉ पुलिस द्वारा सलामी से संमानित किया गया, तत्पश्चात पुलिस अधीक्षक द्वारा परेड का निरीक्षण कर उपस्थित बल के समस्याओं की जानकारी ली तथा उनका यथा उचित निराकरण कर निरंतर परेड करने हेतु निर्देशित किया गया। निरीक्षण के दौरान पुलिस अधीक्षक ने थाना के विभिन्न मामलों का गहनता से निरीक्षण करते हुए पुलिस के समक्ष अनुसंधान में उत्पन्न समस्याओं से भी अवगत होकर आवश्यक दिशा निर्देश दिये।

रेत का अवैध उत्खनन करते दो वाहनो को किया जप्त

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। बहरी पुलिस से मिली जानकारी के आधार पर ग्राम बारी कोठार गोपद नदी से एक ट्रैक्टर का चालक नदी से रेत चोरी करते पाया गया। पुलिस को अपने समीप आते देख चालक एवं श्रमिक मौके से फरार हो गयें वहीं पुलिस द्वारा उक्त वाहन को जप्त कर अज्ञात वाहन स्वामी एवं चालक के विरूद्ध धारा 303/2, 317/5 बीएनएस एवं 4/21 खान खनिज अधिनियम के तहत दण्डनीय पाये जाने से अपराध कायम कर विवेचना में लिया गया। वहीं दूसरे प्रकरण में एक टाटा 12 वाहन क्रमांक एमपी 53 जीए 432 का चालक वाहन में चोरी का रेता लोड कर पोखरा के समीप पकड़ा गया। आरोपी चालक, वाहन स्वामी राकेश साहू पिता गंगा प्रसाद साहू उम्र 38 वर्ष निवासी ग्राम पोड़ी थाना बहरी का उक्त कृत्य धारा 303/2, 317/5, बीएनएस एवं 4/21 खान खनिज अधिनियम का दण्डनीय अपराध पाये जाने पर अपराध कायम कर विवेचना में लिया गया।

मिनी ट्रक पेड़ से टकराया, वाहन में सवार टमाटर व्यापारी की मौत, साखी मेन रोड पर हुआ हादसा

मीडिया ऑडीटर, शहडोल निप्र। शहडोल के ब्यौहारी थाना क्षेत्र में सीधी-शहडोल मार्ग के साखी मेन रोड पर गुरुवार दोपहर मिनी ट्रक पेड़ से टकरा गया। हादसे में एक व्यापारी की मौत हो गई है। जबकि चालक को गंभीर चोट लगी है। घायल चालक को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंच गई है। आगे की कार्रवाई में जुटी है। बताया जा रहा है कि मिनी ट्रक सिंगौली से शहडोल टमाटर लेने आ रहा था। मिनी ट्रक चालक नीरज मिश्रा के साथ टमाटर व्यापारी राहुल शाह भी ट्रक में सवार था। इसी दौरान सीधी-शहडोल मार्ग के साखी मेन रोड पर मिनी ट्रक पेड़ से टकराकर दुर्घटना का शिकार हो गया। हादसे में टमाटर व्यापारी की मौत हो गई। जबकि चालक मिश्रा की गंभीर चोटें आई हैं। जिसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। वही, हादसे की सूचना पर पुलिस बल मौके पर पहुंच गई। घटना के बारे में जांच शुरू कर दी है।

रहवासी बोले- वाहन पर चालक ने नियंत्रण खो दिया थाः स्थनीय लोगों ने कहा- वाहन काफी तेज रफ्तार में था। चालक ने वाहन से अपना नियंत्रण खो दिया और सड़क किनारे लगे पेड़ से वाहन टकरा गया। जिसमें व्यापारी वाहन में ही फंसा रह गया। चालक को स्थानीय लोगों ने किसी तरह से कड़ी मशक्कत के बाद बाहर निकाला और उसे अस्पताल भेज दिया था।

थाना प्रभारी अरुण पांडे ने बताया कि सिंगरौली से शहडोल टमाटर लेने आ रहा वाहन सड़क दुर्घटना का शिकार हुआ है। जिसमें टमाटर व्यापारी की मौत हुई है, तो चालक को गंभीर चोट पहुंची है पुलिस मामले पर जांच कर रही है, चालक का उपचार अस्पताल में चल रहा है।

सांसद ने व्यापारियों की सुनी समस्या निदान का दिया आश्वसन

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। गुरूवार को व्यापारियों की समस्या को सुनने के लिए नवीन सब्जी मंडी जोरौंधा बाईपास में आवश्यक बैठक आयोजित की गई, जिसमें व्यापारियों की विभिन्न समस्याओं पर चर्चा की गयी। बैठक में मुख्य रूप से सांसद राजेश मिश्रा, व्यापारी संघ के अध्यक्ष लालचंद गुप्ता, जनपद अध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह परिहार, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष देवेंद्र सिंह मुन्नू, तहसीलदार जानवी शुक्ला, नगर पालिका सीएमओ मिनी अग्रवाल एवं वरिष्ठ समाजसेवी कन्हैया सिंह, पंकज सिंह, मंडी एसोसिएशन के अध्यक्ष अमित गुप्ता एवं थोक व्यापारी और फुटकर व्यापारी उपस्थित रहें।व्यापारियों ने आए हुए अतिथियों को अवगत करते हुए उक्त स्थल पर चारों तरफबाउंड्री की व्यवस्था, आवागमन के लिए गेट की व्यवस्था, बिजली की व्यवस्था, वेटिंग रूम की व्यवस्था, सुलभ शौचालय की व्यवस्था, पेवर ब्लॉक की व्यवस्था से अवगत करा कर त्वरित रूप से कार्रवाई की मांग की जहॉ अतिथियों द्वारा त्वरित विधिक कार्रवाई की बात कही गयी।

मोगली क्विज प्रतियोगिता में सीधी टीम प्रथम स्थान पर

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। छात्रों में पर्यावरण और वन के प्रति समझ और संवेदन शीलता विकसित करने के लिए जिला स्तरीय मोगली महोत्सव का आयोजन पेंच राष्ट्रीय अभ्यारण सिवनी में 11 नवंबर से 13 नवंबर तक आयोजित किया गया। इस महोत्सव में प्रदेश की 55 जिलों की टीम ने भाग लिया। सभी मोगली मित्रो ने जंगल सफारी में बाघ तेंदुआ, चीतल हिरण, बारहसिंगा गौर और बहुत सारे पक्षी देखे। इसके अलावा बच्चो ने नेचर ट्रेल ट्रेजर हंट की यात्रा की। इपको द्वारा आयोजित क्विज प्रतियोगिता में सीधी जिले की मोगली टीम ने लिखित प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस लिखित प्रतियोगिता के आधार पर पांच जिलों की टीमों को चयनित किया गया जो क्विज प्रतियोगिता के लिए आमंत्रित की गई जिसमें सीधी जिले की टीम ने चतुर्थ स्थान प्राप्त किया सीधी जिले की टीम में से उत्कृष्ट विद्यालय सीधी से भाव्या पांडे तथा शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय धुम्मा के छात्र रामनिवास तिवारी रहे। मार्गदर्शी शिक्षकों के रूप में जिला क्विज मास्टर वीरेंद्र सिंह बघेल मार्गदर्शी शिक्षिका वंदना शुक्ला के निर्देशन में जिले के मोगली मित्रो ने कई प्रतियोगिताओं में पुरुस्कार जीते और जिले का नाम रोशन किया। समापन अवसर पर जिला कलेक्टर संस्कृति जैन ने सभी विजेता छात्रों को मेडल और प्रमाणपत्र प्रदान किए। इस अवसर पर विधायक बरघाट मास्कोले, जेडी जबलपुर प्राचिश जैन, सिवनी डीईओ कुवरे और अतिथि गण उपस्थित रहे।

पुलिस ने 23 किलो गांजा के पेड़ के साथ आरोपी को धर दबोचा, 2.30 लाख की बनाई जप्ती

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। मझौली पुलिस से मिली जानकारी के आधार पर 14 नवम्बर 24 को जरिये मुखविर सूचना प्राप्त हुई कि ग्राम अमझर धवाखोह टोला का रामनिवास सिहं गोड अपने घर के पीछे बाडी के अंदर गांजा के हरे पेड अत्याधिक संख्या में लगाया है जो काफी बड़े बड़े है। उक्त सूचना से थाना प्रभारी मझौली द्वारा वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत कराया जाकर उनके मार्गदर्शन में एक टीम गठित कर मुखिवर के बताये स्थान ग्राम अमझर धवाखोह टोला रवाना किया गया। जहॉ 22 किलो 925 ग्राम वजन मादक पदार्थ गांजा के हरे पौधो पेड़ जिसकी अनुमानित कीमत 2 लाख 30 हजार रूपये ऑकी गयी। संदेही रामनिवास सिहं गोड़ पिता स्व. ललोहर सिंह गोड़ उम्र 50 वर्ष साकिन अमझर धवाखोह थाना मझौली के विरूद्ध धारा 8/20बी एनडीपीएस एक्ट के तहत दण्डनीय पाये जाने से आरोपी के विरूद्ध अपराध कायम कर अवैध मादक पदार्थ गांजा को जप्त किया जाकर आरोपी को गिरफ्तार कर मामले को विवेचना में लिया गया है।

बाल दिवस पर बाल विवाह एवं बाल श्रम पर हुई परिचर्चा

मीडिया ऑडीटर, रीवा निप्र। बाल दिवस के अवसर पर जवा में बाल दिवस पर बाल विवाह एवं बाल श्रम पर परिचर्चा हुई। आयोजन ग्राम नगमा के जीवन ज्योति पब्लिक स्कूल नगमा में अहिंसा वेलफेयर सोसाइटी एवं समग्र जन चेतना विकास परिषद के संयोजकत्व में हुआ। इस दौरान स्कूल प्राचार्य सत्पपाल पांडे, शासकीय स्कूल शीतलहा के प्राचार्य हीरामणि तिवारी,एवं समाज सेसेवी चक्रधर सिंह, महिला बल विकास से सुषमा सिंह ने उद्बोधन दिया। स्कूली बच्चों एवं ग्रामीण नागरिक उपस्थित रहें। संयोजक प्राचार्य सत्पपाल पांडे संचालन किया। चक्रधर सिंह ने बच्चों को बालदिवस के शुभकामनाए प्रेषित करते हुए बाल विवाह, बाल श्रम जैसे सामाजिक कुरीतियों से छुटकारा दिलाने की दिशा जागरूक रहने का आहवान किया। बच्चो ने बालदिवस पर भाषण प्रस्तुत किया। उत्कृष्ट बच्चों को पुरस्कार वितरित किया गया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से सरपंच दयानंद शर्मा, प्रधानाचार्य प्रियंकापांडे, गणेश सोनी, जियामुद्दीन, श्याम किरण सोनी सहित अन्य उपस्थित रहे।

ससुराल में फांसी के फंदे पर मिली महिला की लाश

मायके वालों ने कहा- सास-ससुर और दामाद परेशान करते थे, हत्या की आशंका जताई

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी जिला मुख्यालय से छह किमी दूर नौगवां में 24 वर्षीय महिला का शव गुरुवार को फांसी के फंदे पर मिला है। घटना की जानकारी लगते ही मायके के लोग और जमोड़ी थाना पुलिस पहुंच गई। मृतका का नाम संध्या साकेत था। परिजनों ने बताया कि संध्या सुबह 10 घर में काम कर रही थी। करीब आधे घंटे बाद कमरे में जाकर साड़ी के फंदे से फांसी लगा ली। पति नीरज साकेत ने बताया कि हम दोनों के बीच सब कुछ ठीक था। मैं खाना खाकर काम करने के लिए सीधी गया हुआ था। मां ने मुझे फोन कर बताया कि तुम्हारी पत्नी ने आत्महत्या कर ली है। इसके बाद मैं घर पहुंचा और पुलिस को सूचना दी।

मायके वालों ने हत्या की आशंका जताईः मृतका के पिता रामनरेश साकेत ने बताया कि मैंने अपनी बेटी की शादी 6 साल पहले की थी। दामाद, उसके सास-ससुर उसे परेशान करते थे। उसने कई बार मुझे बताया था। मैं हर बार उसे समझा देता था कि सब ठीक हो जाएगा। मैंने बुधवार शाम को बेटी से बात की थी। उस समय उसने सब कुछ ठीक-ठाक बताया था। अचानक मेरी बेटी फांसी नहीं लगा सकती। उसकी हत्या की गई है। इसकी जांच होनी चाहिए। वहीं जमोड़ी थाना प्रभारी विशाल शर्मा ने बताया कि मायके वालों ने हत्या की आशंका जताई है। हम दोनों एंगल से जांच कर रहे हैं।

बहरी पुलिस ने नाबालिग अपहृता को दस्तयाब कर किया परिजनों कें सुपुर्द

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। बहरी पुलिस द्वारा नाबालिग अपहृता को दस्तयाब कर किया परिजनों कें सुपुर्द। बताया गया कि 4 नवम्बर 24 को फरियादिया थाना बहरी सीधी उपस्थित आकर इस आशय की रिपोर्ट लेख कराई थी कि मेरी नाबालिग लड़की घर से बिना बतायें कहीं चली गई है। जिसकी पता तलाश की गई किन्तु कहीं नही मिली।

पुलिस ने अपराध कायम कर विवेचना मे लिया। दौरान विवेचना अपहृता की उपस्थिति ग्राम तेन्दुहा थाना बहरी में होने पर एक टीम गठित कर रवाना कियास गया जो टीम 12 नवंबर को अपहृता दस्तयाब कर वैधानिक कार्यवाही उपरांत उसके परिजनों के सुपुर्द किया गया।

सांसद ने किया बूथ समिति का गठन

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। भारतीय जनता पार्टी द्वारा चलाए जा रहे संगठन पर्व के अंतर्गत सीधी नगर मंडल के पोलिंग बूथ क्रमांक 232 में बूथ समिति का गठन लोकसभा संसदीय क्षेत्र के सांसद और इस बूथ के निवासी डॉक्टर राजेश मिश्रा के मुख्य आतिथ्य एवं पार्टी के वरिष्ठ नेता पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष देवेंद्र सिंह मुन्नू और मंडल अध्यक्ष मुनिराज विश्वकर्मा की विशिष्ट उपस्थिति में संपन्न हुआ। बूथ क्रमांक 232 के गठन की प्रक्रिया स्थानीय पंडित दीनदयाल पार्क में आयोजित हुई। जिसमें सर्वसम्मति से वरिष्ठ अधिवक्ता फूल चंद्र गुप्ता को बूथ अध्यक्ष एवं प्रतिष्ठित व्यवसाय अमित बसंतानी को बूथ का महामंत्री बनाया गया।

कलेक्टर ने ली बैठक

समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन के संबंध में ली जानकारी, 21 हजार 975 कृषकों ने कराए पंजीयन

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर निप्र। अनूपपुर जिले में कलेक्टर हर्षल पंचोली ने गुरुवार को समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन को लेकर बैठक ली। उन्होंने उपार्जन केंद्र पर पारदर्शिता लाने के लिए अंतर्विभागीय अधिकारियों की ड्यूटी नोडल अधिकारी के रूप में लगाने के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर ने उपार्जन संबंधी पंजीयन की स्थिति की जानकारी जिला आपूर्ति अधिकारी से ली।

जिला आपूर्ति अधिकारी ने बताए कि खरीफ उपार्जन के लिए 21 हजार 975 कृषकों ने पंजीयन कराया है। जो पिछले वर्ष से 10 प्रतिशत ज्यादा है। कलेक्टर ने उपार्जन केंद्रों में किसानों की सुविधाओं के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा- एफएक्यू के अनुसार उपार्जन के लिए सोसाइटी स्तरीय व गोदाम स्तरीय सर्वेयर की नियुक्ति सुनिश्चित की जाए।

धान की नमी के परीक्षण के लिए सभी उपार्जन केन्द्रों में मॉस्चर मीटर की उपलब्धता की जाए। हर दिन स्टाफ सत्यापन करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने बैठक के दौरान स्टॉक शॉर्टेज के पूर्व में दर्ज मामलों के बारे में जानकारी लेते हुए प्रकरणों पर आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए हैं।

कलेक्टर ने उपार्जन केंद्र की स्थापना और गोदाम स्तरीय करने के निर्देश देते हुए कहा है कि किसानों की सहूलियत के अनुरूप व्यवस्था बनाई जाए। कलेक्टर ने खरीफ उपार्जन के लिए बारदाना व्यवस्था के संबंध में भी जिला आपूर्ति अधिकारी से जानकारी ली है।

मातगुंवा पुलिस की कार्रवाई

मारपीट-आगजनी कर संपत्ति को नुकसान पहुंचाने वाला आरोपी गिरफ्तार, कोर्ट ने भेजा जेल

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर निप्र। छतरपुर जिले की मातगुंवा थाना पुलिस ने गुरुवार शाम को खुलासा करते हुए मारपीट और आगजनी कर संपत्ति को नुकसान पहुंचाने वाले फरार आरोपी को गिरफ्तार कर लिया।

आरोपी घटना के बाद 2023 से फरार था। जिसे गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है। आरोपी मंशाराम के विरुद्ध मारपीट का अपराध पूर्व से दर्ज है।

मातगुंवा थाना प्रभारी वीरेंद्र रैकवार ने बताया कि सितंबर माह वर्ष 2023 में थाना क्षेत्र के ग्राम साकरेबरा में मारपीट और आगजनी कर संपत्ति को नुकसान संबंधी रिपोर्ट पर आरोपी मंशाराम पर केस दर्ज किया गया था। आरोपी घटना कर फरार हो गया था, जिसकी पुलिस तलाश कर रही थी।

मातगुंवा पुलिस ने उक्त प्रकरण के फरार आरोपी मंशाराम पिता अच्छेलाल राजपूत निवासी ग्राम साकरेबरा को गिरफ्तार कर न्यायालय पेश किया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया।

आजादी और राष्ट्र निर्माण के अग्रणी नायक थे पंडित नेहरू

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। आधुनिक भारत के निर्माता, वैज्ञानिक सोच के प्रेरक और लोकतंत्र के सशक्त प्रहरी, पंडित जवाहर लाल नेहरू की जयंती के अवसर पर पूजा पार्क स्थित उनकी प्रतिमा पर जिला कांग्रेस अध्यक्ष ज्ञान सिंह सहित वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं ने पुष्पांजली अर्पित कर उन्हें याद किया। तत्पश्चात जिला कांग्रेस कार्यालय जवाहर भवन सीधी में विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया सभी कांग्रेसजनों ने पंडित जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तित्व कृतित्व एवं राष्ट्र के प्रति उनके योगदान को याद किया।

अरुणोदय बाल गृह पड़रा में शिविर का आयोजन किया गया

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सिविल सर्जन डॉ दीपा रानी इशरानी के निर्देशन में अरुणोदय बाल गृह पड़रा में शिविर का आयोजन किया गया जिसमें मानसिक स्वास्थ्य तथा दंत चिकित्सा से संबंधित तथ्यों के बारे में जागरूक किया गया। डॉ अनुराग पाल, डॉ माधुरी तथा नर्सिंग ऑफिसर अमिता द्विवेदी उपस्थित रहे।

विचार

चीन के विश्वासघात ने दिए थे गहरे जख्म

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान अपने जीवन के आठ साल, ग्यारह महीने और सात दिन अंग्रेजों की जेलों के बिताने वाले पं. जवाहरलाल नेहरू के बारे में जब भी चर्चा हो, यह जरूर कहा जाता है कि स्वतंत्रता के बाद वे 16 साल प्रधानमंत्री रहे और 'आधुनिक भारत के निर्माता' कहलाये। लेकिन उनका मुश्किलों भरा आखिरी समय कैसे बीता, खासकर 1962 के चीनी हमले के उपरांत की असहज स्थिति में, हम कम जानते हैं।? निस्संदेह, 27 मई, 1964 को निधन से पहले उन्होंने कई तकलीफों का सामना किया। बता दें कि पंडित जवाहर लाल नेहरू का जन्म 14 नवम्बर 1889 को इलाहाबाद में हुआ था। अलबत्ता, कई लेखों में विवरण मिलता है कि '1962 में चीन से हुई लड़ाई ने उनको तोड़कर रख दिया था और उसके सदमे से वे कभी उबर नहीं पाये।' परिणाम यह हुआ कि 'उनकी पुरानी शारीरिक ताकत, बौद्धिक कौशल और नैतिक चमक बीते दिनों की बात हो गईज्। उनकी चाल में जो तेजी हुआ करती थी, वह भी लुप्त हो गई।' बताते हैं कि साल 1964 आते-आते उनकी स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं और गम्भीर हो गईं। इसके बावजूद वे भुवनेश्वर में हो रहे कांग्रेस के वार्षिक सम्मेलन में भाग लेने गये। सम्मेलन के कार्यक्रम में आठ जनवरी, 1964 को उन्हें बोलना था। लेकिन इसके लिए पुकारे जाने पर वे उठे तो डगमगाकर सामने की तरफ गिर पड़े। तब वहां उपस्थित उनकी पुत्री इंदिरा गांधी ने सम्मेलन के स्वयंसेवकों व नेताओं के सहयोग से उन्हें उठाया और संभाला। थोड़ी ही देर बाद डॉक्टरों ने जांच की तो पाया कि उनके शरीर का बायां हिस्सा पक्षाघात का शिकार हो गया है। फिर तो गहरी चिन्ता के बीच चिकित्सा के लिए उन्हें भुवनेश्वर स्थित राजभवन ले जाया गया। लेकिन डॉक्टरों की भरसक कोशिशों के बावजूद उन्हें इतना स्वास्थ्य लाभ नहीं हो सका कि वे अपना स्थगित भाषण देने दोबारा सम्मेलन में जा सकें। बारह जनवरी को वे नई दिल्ली लौट आये तो डॉक्टरों ने उनसे कहा कि बेहतर होगा कि वे दोपहर में भी थोड़ी देर सोने की आदत डाल लें। आम तौर पर वे रोजाना 17 घंटे काम करते थे। दोपहर में सोने के लिए उन्हें इनमें पांच घंटों की कटौती करनी पड़ी। उन्हें इसका लाभ भी मिला। फिर 26 जनवरी तक उनका स्वास्थ्य इतना सुधर गया कि वे गणतंत्र दिवस समारोह में आराम से भाग ले पाये। लेकिन जल्दी ही उनकी शक्ति फिर क्षीण होने लगी, जिसके चलते फरवरी में आयोजित संसद के उस साल के पहले सत्र में वे बैठे-बैठे ही भाषण देने को विवश हुए। फिर भी उन्होंने आत्मविश्वास नहीं खोया और गर्मियों तक इतनी शक्ति संचित कर ली कि किसी का सहारा लिये बिना सामान्य दिनचर्या निपटा सकें।

नेहरू जैसा बालमन समझने वाला चाहिए दूसरा 'चाचा'

डॉ. रमेश ठाकुर

आज खास दिन 'बाल दिवस' और चाचा नेहरू से तो ज़माना परिचित ही है। पर, लोग ये नहीं जानते कि नेहरू जी आखिर बच्चों के चाचा कैसे कहलाए? इस रहस्य से अधिकांश अनभिज्ञ है। वैसे, 'बाल दिवस' आजाद भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंड़ित जवाहर लाल नेहरू के जन्मदिवस पर मनाया जाता है। उनका जन्म 14 नवंबर 1889 को इलाहाबाद में हुआ था। जबकि, ये दिवस संयुक्त राष्ट्र द्वारा अधिकृत 20 नवंबर को पूरे विश्व भर में मनाया जाता है।

लेकिन साल 1964 में पंडित जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु के बाद, भारतीय संसद में उनके जन्मदिन को देश में आधिकारिक तौर पर 'बाल दिवस' के रूप में स्थापित करने का प्रस्ताव एकमत से जारी किया गया। क्योंकि वह बच्चों नितंत प्रिय हुआ करते थे। उनका बच्चों के प्रति लगाव देखने लायक होता था। उन्हें %चाचा% क्यों कहा जाने लगा, ये एक दिलचस्प वाक्या है। चलिए बताते हैं नेहरू के चाचा बनने की कहानी। पंड़ित नेहरू एक मर्तबा इलाहाबाद में चुनावी सभा को संबोधित कर रहे थे। मौसम जाड़े का था। सभा में एक बुजुर्ग महिला भी भाषण सुनने अपने दुधमुंह बच्चे के साथ पहुंची थी। जारी भाषण में बच्चा तेजी से रोने लगा। पंड़ित नेहरू की जैसे ही नजर बच्चे के रोने पर पड़ी, उन्होंने अपना भाषण रूकवा दिया और तुरंत अपने अंगरक्षक को बच्चा और उसकी मां को मंच पर लाने को कहा, मां अपने बच्चे के साथ जैसे ही मंच पर चढ़ी, नेहरू ने आगे बढ़कर स्वंय बच्चे को अपने गोद में उठा लिया। बच्चा पंड़ितजी की गोद में जाते ही चुप हो गया और उनके जेब में लगे पेन से खेलने लगा। बच्चे के प्रति नेहरू के प्यार-स्नेह को देखकर सभा में उपस्थित लोग अचंभित हो गए और उसी समय से लोगों ने उन्हें 'चाचा' कहना शुरू कर दिया। बच्चों के प्रति उदारता, दयालुपन, स्नेहभाव और दीवानगी की ललक हम सभी में भी जगे, उसी मकसद को आज का ये खास दिवस पूरा करता है। हालांकि बच्चे से प्यार तो हर कोई करता है। लेकिन नेहरू का प्यार बेशकीमती, अद्भुत, चमत्कारी होता था। रोते हुए बच्चे भी उनके सन्मुख जाकर एकाएक चुप हो जाते थे। बच्चों को चुप कराने की उनके पास पता नहीं कौनसी अद्भुत कला थी, जो सभी आश्चर्यचकित करती थी। सालाना हिंदुस्तान में बाल दिवस बड़े उत्सव के तौर पर मनाया जाता है। ये दिवस बच्चों को ढेर सारा स्नेह, उपहार और लाड-प्यार देने को समर्पित होता है। जवाहरलाल नेहरू शुरू से बच्चों के अधिकारों और एक शिक्षा प्रणाली के पक्षधर और समर्थक रहे थे। वह प्रत्येक बच्चे को देश का आने वाला भविष्य कहते थे, बच्चा बेशक कितना भी नटखट क्यों न हो, वह उनकी भी भरपूर सराहना करते थे। फूलपुर की चुनावी सभा में नेहरू ने अपने प्रसिद्ध भाषणों में एक बार कहा था कि बच्चे बगीचे में कलियों की तरह होते हैं और उनका सावधानीपूर्वक और प्यार से पालन-पोषण करना चाहिए, क्योंकि वे देश का भविष्य और कल के नागरिक हैं। मौजूदा वक्त में जिस बेहिसाब से समूचे देश के नौनिहालों के प्रति अत्याचार, विभिन्न किस्म की समस्याएं, और अपराध बढ़े हैं, वो अगर जिंदा होते तो बहुत दुखी होते। एनसीआरबी की सालाना रिपोर्ट बच्चों के गायब होने के जो आंकड़े प्रस्तुत करती है, वो निश्चित रूप से डरावने होते हैं। तमाम हुकूमती कोशिशों के बावजूद भी बाल समस्याएं रुकने का नाम नहीं लेती।

आज बाल दिवस के मौके पर देशभर के स्कूलों में गायन, निबंध, वाद-विवाद, खेलकूद जैसी विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित होंगी। अधिकांश जगहों पर नेहरू की जीवनी पर लेख-लेखन कम्पटीशन आयोजित होंगी। दरअसल, 'नेशनल बाल दिवस' पं. नेहरू को सच्ची श्रद्धांजलि देने का भी दिन कहा जाता है, जो उसके हकदार भी हैं। नेहरू बच्चों को राष्ट्र की संपत्ति मानते थे। साथ ही वह अक्सर नौनिहालों को मुल्क का सबसे कीमती संसाधन के रूप में भी संदर्भित करते थे। इसलिए, अपने युवा नागरिकों के जीवन की बेहतरी के प्रति राष्ट्र की प्रतिबद्धता की पुष्टि करने के लिए उनके जन्मदिन को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। आज इस दिवस के जरिए बच्चों में खुशियां, उनके अधिकारों और उनके उज्ज्वल भविष्य को संवारने के लिए जागरूकता भी फैलाई जाती है। बच्चों के प्रति जागरूकता को बढ़ाना और उन्हें एक सुरक्षित, खुशहाल और शिक्षा से भरपूर जीवन देने के लिए आज सभी को संकल्पित भी होना चाहिए।

सन् 1954 में, संयुक्त राष्ट्र की ओर से 20 नवंबर को अंतर्राष्ट्रीय बाल दिवस घोषित किया गया था। पर, भारत ने इस दिवस को 14 नवंबर यानी पंडित नेहरू के जन्मदिन पर मनाने का निर्णय लिया। हिंदुस्तान में ये दिन को बच्चों के अधिकारों की रक्षा करना, उन्हें सुरक्षित वातावरण देना और उनकी शिक्षा व स्वास्थ्य पर ध्यान देने पर केंद्रित होता है। बच्चों के प्रति बढ़ते अत्याचार, बाल श्रम, और शिक्षा की कमी जैसी समस्याओं पर जागरूकता निरंती फैलती रहनी चाहिए। बच्चों को बचपन में सही मार्गदर्शन और प्यार दिया जाना चाहिए। सभी के बच्चे बिना किसी भेदभाव के स्वतंत्र रूप से सीखने और बढ़ने का अधिकार रखते हैं। पंडित नेहरू हमेशा बच्चों के बीच जाकर उनके साथ समय बिताना पसंद करते थे और उनका मानना था कि बच्चों में मासूमियत, सच्चाई, और निष्ठा होती है, जो बड़ों को भी प्रेरणा देती हैं। शिक्षा का अधिकार, बाल श्रम से सुरक्षा और एक सुरक्षित व प्यार भरे वातावरण में बढ़ने का अधिकार हम सभी को मिलकर दिलवाना चाहिए। हालांकि, भारत में बाल अधिकारों की सुरक्षा के लिए बाल संरक्षण कानून और विभिन्न सरकारी-गैरसरकारी संस्थाएं कार्यरत हैं, जिनका उद्देश्य बच्चों के भविष्य को सुरक्षित बनाना है। इनका आम जनों को भी मिलकर सहयोग करना चाहिए।

मारक महंगाई

केंद्रीय बैंक व सरकार की तमाम कोशिशों के बावजूद, देश में खाद्य पदार्थों की बढ़ती कीमतों के चलते खुदरा मुद्रास्फीति पिछले चौदह महीनों की ऊंचाई पर जा पहुंची हैं। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय यानी एनएसओ की ओर से मंगलवार को जारी आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार खुदरा महंगाई दर भारतीय रिजर्व बैंक के छह फीसदी के संतोषजनक स्तर से ऊपर निकल गई है। आंकड़ों के अनुसार अक्तूबर में खुदरा मुद्रास्फीति 6.21 प्रतिशत रही। ऐसे में खुदरा महंगाई के आरबीआई द्वारा निर्धारित संतोषजनक स्तर से ऊपर निकल जाने से इस साल दिसंबर में ब्याज दरों में कटौती की उम्मीदें कमोबेश धाराशाई हो गई हैं। दरअसल, खुदरा महंगाई में यह वृद्धि सब्जियों,फलों, वसायुक्त वस्तुओं व तेलों की कीमतों में तेजी की वजह से हुई है। जो कि भारत की खाद्य आपूर्ति श्रृंखला में व्याप्त गहरी संरचनात्मक चुनौतियों का खुलासा करती है। साथ ही स्थिति में सुधार के लिये अविलंब सरकारी हस्तक्षेप की जरूरत को बताती है।

निश्चित रूप से अक्तबूर की खाद्य मुद्रास्फीति दर का इस साल सबसे अधिक 10.87 फीसदी होना नीति-नियंताओं के लिये चिंता का विषय होना चाहिए। वहीं दूसरी ओर यह बढ़ती महंगाई एक महत्वपूर्ण संकेत भी देती है कि अस्थिर खाद्य कीमतें देश की संपूर्ण आर्थिक स्थिरता को कैसे बाधित कर सकती है। विशेष रूप से टमाटर और तेल जैसी वस्तुओं की कीमतों में बढ़ोतरी, कुछ प्रमुख वस्तुओं और आयात की जाने वाली चीजों पर देश की निर्भरता हमारी कमजोरी को ही दर्शाती हैं।

देश की तरक्की में बाधक हैं मुफ्त की रेवड़ियां

क्षमा शर्मा

पिछले दिनों कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने कर्नाटक में अपने ही दल की सरकार की यह कहकर आलोचना की कि जो चुनावी वादे पूरे नहीं किए जा सकते, उन्हें न करें। वजह यह है कि सरकार बन जाने पर उन्हें पूरा करने में कठिनाई आती है। उनका आशय मुफ्त की उन योजनाओं से था, जिन्हें पूरा करने में सरकारी खजाने को खाली होने का डर होता है। हिमाचल प्रदेश के बारे में अभी खबर आई ही थी कि वहां सरकारी खजाने का हाल यह है कि सरकारी कर्मचारियों को वेतन देने तक के लिए संसाधन जुटाने में दिक्कत आ रही है। हिमाचल प्रदेश में भी कांग्रेस की सरकार ही है। लेकिन पक्ष-विपक्ष के नेताओं को चुनाव जीतने से मतलब होता है। सोच लिया जाता है कि बाद की बाद में देखेंगे। इसलिए खड़गे के बयान पर ध्यान दिया जाना चाहिए। अरसे से देख रहे हैं कि सभी दल, जनता उन्हें वोट दे, वे किसी न किसी तरह चुनाव जीत जाएं, इसके लिए मुफ्त में सब कुछ देने का वादा करते हैं। वे भूल जाते हैं कि अपने ही किए गए वादों के जाल में फंस सकते हैं। फंसते हैं, तभी तो खड़गे ने ऐसा बयान दिया।

एक बार तमिलनाडु से आने वाली घरेलू सहायिका ने बताया था कि महीने भर का राशन-अनाज, चावल, दालें, तेल, मसाले आदि सब चीजें मुफ्त में हर एक के घर पहुंचा दी जाती हैं। महिलाओं के लिए बस यात्रा मुफ्त है। चुनावी घोषणापत्र में अनेक दल टीवी, मोबाइल, साइकिल, स्कूटी, लैपटॉप, साड़ियां आदि देने का वादा करते हैं। पक्के घर, बिजली, पानी आदि भी देने के वादे किए जाते हैं। मुफ्त की चिकित्सा सुविधा भी। इन दिनों तो युवाओं, स्त्रियों, बुजुर्गों के खाते में सीधे हजारों रुपए भेजने की बातें की जाती हैं। ये पैसे कहां से आएंगे, इसकी चिंता किसी दल को नहीं होती। सारे पैसे मुफ्त में देने में ही खर्च हो जाएंगे, तो बाकी के कामों का क्या होगा। कोई भी यह नहीं कहता कि लोग परिश्रम करें। न ही इसकी योजनाएं बनाई जाती हैं कि लोगों को अधिक से अधिक संख्या में काम पर कैसे लगाया जाएगा। वैसे भी अपने यहां कहावत है कि अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम। दास मलूका कह गए सबके दाता राम। यानी कि लोग भाग्य और अब सरकारों के भरोसे रहें। किसी भी देश को बर्बाद करना हो, तो लोगों को श्रम से मुंह मोड़ना और भाग्य के भरोसे रहना सिखा दें। यही अपने यहां हो रहा है। मुफ्त की रेवड़ियां बांटें और कुछ रास्ता न बचे तो वर्ल्ड बैंक के सामने कटोरा फैलाकर कर्ज ले लिया जाए। वेनेजुएला जैसे फलते-फूलते देश की अर्थव्यवस्था इन रेवड़ियों के कारण किस तरह से बैठ गई, यह हम सबने देखा। और सोवियत संघ के पतन से भी हमने कुछ नहीं सीखा। सोचें कि मुफ्त देने के मुकाबले यदि इन पैसों को देश के विकास में लगाया जाए, तो इससे लोगों को काम भी मिलेगा और लोगों के परिश्रम की आदत भी नहीं छूटेगी। कुछ साल पहले बिजली का बिल ठीक कराने के लिए बिजलीघर गई थी। वहां पता चला कि फोटोकापी वाला इस काम को आसानी से करा देता है। कुछ पैसे देने होंगे। बार-बार आने और फिर भी काम न हो पाने के मुकाबले, कुछ पैसे देना उचित लगा। वहां पहुंची, तो फोटोकापियर एक आदमी से बात कर रहा था। वह आदमी कह रहा था कि पास ही की एक

कालोनी में उसका पच्चीस गज का चार मंजिल का घर है। चारों मंजिल उसी के पास हैं। वह चाहता है कि हर मंजिल पर एक अलग मीटर लगा दिया जाए, जिससे कि किसी भी मंजिल का बिल दो सौ यूनिट से ज्यादा न आए और उसे बिजली का एक पैसा न देना पड़े। यानी कि खर्च तो आठ सौ यूनिट होंगी, मगर अलग-अलग मीटरों के कारण उसका बिजली का बिल शून्य होगा। कारण, दिल्ली की सरकार ने दो सौ यूनिट बिजली मुफ्त में दे रखी है। यह तो एक उदाहरण है, लम्बे-चौड़े दिल्ली शहर में ऐसा कितने लोग करते होंगे, इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। दरअसल, एक बार अगर मुफ्त की कोई योजना शुरू कर दी जाए तो फिर किसी भी दल की हिम्मत नहीं होती कि वह उसे खत्म कर दे। क्योंकि खत्म करते ही विरोधी उसके पीछे पड़ जाते हैं और अपना नुकसान होते देख, लोग चुनाव हरा देते हैं। इसके अलावा यह भी होता है कि आज आपने किसी को एक रुपया मुफ्त दिया है, तो वह कहता है कि एक रुपया तो पहले से ही मिलता है, वही दे रहे हो तो नया क्या दे रहे हो। वोट तो तब दें, जब ये बताओ कि इस एक रुपए से बढ़ाकर कितना दोगे। जितना मुफ्त मिलता जाता है, लालच बढ़ता जाता है। कुछ साल पहले पास ही के उत्तर प्रदेश के शहर में साहित्य उत्सव में गई थी। वहां स्थानीय लोग बहुत थे। उनमें से बहुत से गांवों से आए थे। उनका कहना था कि अब गांवों में युवा काम करने को तैयार नहीं हैं क्योंकि वहां लोगों को बहुत कुछ मुफ्त मिलता है, तो कोई काम क्यों करे। यह भी बताया कि बहुत से युवा इकट्ठे होकर, दिन भर जुआ खेलते रहते हैं। चूंकि खाली हैं, तो लड़ाई-झगड़ा और अपराधों का ग्राफ भी बढ़ा है। यह सिर्फ एक स्थान की बात नहीं है। भारत भर से ऐसी खबरें आ रही हैं कि अब काम करने वाले आसानी से नहीं मिलते।

खटाखट-फटाफट के चक्कर में लोग इस बात से आश्वस्त हो जाते हैं कि उन्हें अब खाने-पीने और पैसे की दिक्कत नहीं होगी, तो बिना मतलब काम क्यों किया जाए। परिश्रम न होने के कारण गांवों में, कम उम्र में ही वे बीमारियां बढ़ रही हैं, जिन्हें बड़ी उम्र के रोग कहा जाता था।

तमाम बड़े अर्थशास्त्री मुफ्त की योजनाओं को किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के लिए बहुत खतरनाक मानते हैं, मगर दलों को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। नकली समाजवाद का रोग अपने देश में इस कदर फैला है कि सब कुछ फ्री में चाहिए। जबकि एक मशहूर वाक्य है- लंच इज नाट फ्री। यानी कि पूंजीवाद में कुछ भी मुफ्त नहीं होता। एक तरफ जीडीपी कैसे बढ़े, इसके लिए सरकारें रोती रहती हैं, मगर सब कुछ मुफ्त-मुफ्त के वादे करके लोगों का परिश्रम से मुंह मोड़ती हैं। चरैवेति-चरैवेति का मतलब मात्र चलना नहीं है। बल्कि जीवन के लिए जो भी जरूरी सुविधाएं हैं, उनके लिए कठिन परिश्रम करना है।

लोकतंत्र की यह सबसे बड़ी मुसीबत भी है कि नारा दिया जाता है कि जनता मालिक है, लेकिन मालिक बनते ही लोग किसी के लिए काम करने के मुकाबले, मुफ्त की योजनाओं की बाट देखने लगते हैं। सारे राजनीतिक दल इसे खूब हवा भी देते हैं।

कुएं से निकलने लगा पेट्रोल, लोगों ने बाल्टियों में भरकर निकाला

पेट्रोल पंप का टैंक फटने से रिसाव, एरिया किया गया सील

मीडिया ऑडीटर, दंतेवाड़ा एजेंसी। छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले के गीदम में बुधवार को एक घर के कुएं से अचानक पेट्रोल निकलने लगा, जब शहर के लोगों को इसकी जानकारी मिली, तो घर में लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। लोग बाल्टियों से पेट्रोल निकालने लगे। खबर मिलते ही प्रशासन ने पूरे इलाके को सील कर दिया है।

जब इसकी जांच हुई तो पता चला कि, करीब 100 मीटर दूरी पर स्थित पेट्रोल पंप का टैंक फट गया था, जिससे पेट्रोल जमीन के अंदर से रिसकर कुएं में जमा हो रहा था। फिलहाल, प्रशासन ने पेट्रोल पंप को बंद करवा दिया है।

पेट्रोल चोरी की हुई थी शिकायत: गीदम के पुराने बस स्टैंड में बाफना पेट्रोल पंप है। पंप मालिक ने कुछ दिन पहले गीदम पुलिस से शिकायत की थी कि, उसके पंप से पेट्रोल की चोरी हो रही है। हर दिन कई लीटर पेट्रोल कम हो रहा है। जिसके बाद पुलिस ने मामले की जांच की। सीसीटीवी फुटेज खंगाले गए। आस-पास में मुखबिर लगाकर नजर भी रखी गई। लेकिन चोरी की इस गुत्थी की पुलिस समझ नहीं पाई।

घर के कुएं से निकला पेट्रोल: वहीं, 13 नवंबर की शाम पेट्रोल पंप के ठीक पीछे स्थित वार्ड नंबर-12 के निवासी भोलू जैन के घर के कुएं से पेट्रोल निकलने लगा। घर वालों को पानी में पेट्रोल की गंध आने लगी। जिसके बाद उन्होंने कुएं में बाल्टी डालकर जब पानी निकाला तो उसमें से पेट्रोल निकला।

खबर मिलते ही लगी लोगों की भीड़: यह खबर जब शहर में फैली तो लोगों की भीड़ लगनी शुरू हो गई है। बुधवार देर रात पुलिस और प्रशासन की टीम भी मौके पर पहुंची। जब मामले की जांच हुई, तो पता चला कि पेट्रोल पंप का टैंक फूटा हुआ है। जिसका पेट्रोल रिसकर घर के कुएं में जमा हो रहा था।

पेट्रोल पंप बंद, कुएं का इलाका सील: वहीं, प्रशासन ने तत्काल पेट्रोल पंप को बंद करवा दिया। साथ ही जिस घर के कुएं में पेट्रोल मिला, उसके आस-पास के इलाके को सील कर दिया गया। पुलिस जवानों की ड्यूटी भी लगाई गई है। लोगों की आवाजाही पर रोक लगा दी गई। साथ ही फायर ब्रिगेड की टीम, बिजली विभाग की टीम को भी उस पूरे इलाके में तैनात किया गया है।

आज आएंगे कंपनी के लोग: पेट्रोल पंप के मालिक ने पेट्रोल रिसने की जानकारी कंपनी को दी है। बताया जा रहा है कि, आज कंपनी के टेक्नीशियन आएंगे। साथ ही जमीन के अंदर दबी टंकी से पेट्रोल खाली कर टैंक को ठीक किया जाएगा।

रात भर रही टाइट सिक्योरिटी: गीदम थाना प्रभारी धनंजय सिन्हा ने बताया कि, मामले की जानकारी मिलते ही जवान मौके पर पहुंच गए थे। लोगों की भीड़ को हटाया गया। साथ ही मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए उस पूरे इलाके में रात भर जवानों की ड्यूटी लगाई गई थी। पुलिस का सख्त पहरा था।

मनेन्द्रगढ़ के शासकीय उचित मूल्य दुकान हेतु आवेदन आमंत्रित

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। नगर पालिका क्षेत्र मनेन्द्रगढ़ में शा.उ.मु. दुकान के लिए आवेदन आमंत्रित किए जा रहे हैं। दुकान का आईडी क्रमांक 531002010 है और यह वार्ड क्रमांक 07 एवं वार्ड क्रमांक 14 नगर पालिका परिसर में स्थित है। पहले के निरीक्षण में अनियमितता पाए जाने के कारण आबंटन आदेश निरस्त कर दिया गया है। उक्त शासकीय उचित मूल्य दुकान के लिए आदिम जाति सहकारी समिति, बहुउद्देशीय सहकारी समिति, महिला स्वयं सहायता समूह, वन सुरक्षा समिति, तथा अन्य सहकारी समितियों से आवेदन आमंत्रित किया जा रहा है। आवेदन करने की अंतिम तिथि 15 नवम्बर से 30 नवम्बर तक आवेदन जिला कार्यालय खाद्य शाखा मनेन्द्रगढ़ में जमा करना होगा। आवेदन करने वाली संस्थाओं का पंजीयन कम से कम 03 माह पूर्व का होना अनिवार्य है। आवेदन पत्र के साथसंलग्न किये जाने वाले आवश्यक दस्तावेज संस्था का पंजीयन प्रमाण पत्र ,बैंक खाता विवरण(अद्यतन जानकारी एवं छायाप्रति) अध्यक्ष सचिव का आधार कार्ड (छायाप्रति) संस्था का प्रस्ताव आवश्यक है। आवेदन करने वाली संस्था, केवल अपने बचत खाते में उपलब्ध राशि की जानकारी दे। उक्त बचत खाते में लोन की राशि का उल्लेख न हो आवेदन करने वाली संस्थाएं यह सुनिश्चित करें कि उनके विरूद्ध पूर्व में आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955 या छत्तीसगढ़ सार्वजनिक वितरण प्रणाली (नियंत्रण) आदेश के तहत कोई प्रकरण न बना रहा हो। यदि आवेदन करने वाले संस्थाओं के विरूद्ध बना हो, वे स्वयंमेव अपात्र होंगे। निर्धारित तिथि के पश्चात कोई आवेदन स्वीकार नहीं किया जाएगा।

धान उपार्जन केन्द्र सिंगरौली में धान खरीदी प्रारम्भ

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। 14 नवम्बर 2024 को भरतपुर विकासखण्ड के धान उपार्जन केन्द्र ग्राम सिंगरौली में धान खरीदी का शुभारंभ किया गया। जनपद उपाध्यक्ष श्री दुर्गा शंकर मिश्रा से कृषक रोहणी गुप्ता का श्रीफल एवं फूल माला से धान उपार्जन केन्द्र में किया स्वागत। इस दौरान कार्यकर्तृता कमलेश कुमार गुप्ता कृषि अधिकारी गजराज सिंह चौहान, कृषि विभाग अधिकारी राम सागर सिंह मार्को,प्रधान पाठक पूर्णानंद दुबे उपस्थित थे। एवं संजय उपाध्याय के द्वारा सिंगरौली में धान खरीद हेतु कुल 01 टोकन जारी किया गया था। जिसमें 01 टोकन के माध्यम से प्रथम कृषक रोहणी गुप्ता से धान खरीदी प्रारम्भ किया गया।रोहणी गुप्ता के टोकन के माध्यम से 50 क्विंटल धान क्रय किया गया। समिति प्रबंधक एवं समस्त कर्मचारी सभी उपस्थित सम्मानीय लोगों के समकक्ष आज 14 नवंबर 2024 को धान खरीदी सिंगरौली में शुभारंभ किया गया एवं चेक लिस्ट अनुसार धान खरीदी हेतु सिंगरौली के प्रभारी एवं अधीनस्थ कर्मचारियों को निर्देशित किया।

जिले में 14 समिति के माध्यम से 25 उपार्जन केंद्रों में किया गया धान की खरीदी

किसानों का पुष्पगुच्छ और श्रीफल भेंट कर किया गया स्वागत

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के सुशासन में प्रदेश के समस्त 33 जिलों में कृषक उन्नति योजना के तहत किसानों से 3100 रूपए प्रति क्विंटल की दर और प्रति एकड़ 21 क्विंटल के मान से धान खरीदी का कार्य आज 14 नवम्बर से प्रारम्भ कर दिया है। खरीदी के प्रथम दिन जिले के 11 उपार्जन केन्द्रों से 934.4 क्विंटल धान का टोकन काटा गया। सभी खरीदी केंद्रों में कृषकों की सुविधा का ध्यान रखा गया है। उनके बैठने के लिए छायादार स्थान की व्यवस्था, पेयजल, शौचालय आदि की व्यवस्था की गयी है। सभी उपार्जन केन्द्रों में किसान का स्वागत पुष्पगुच्छ और श्रीफल देकर किया गया। सभी उपार्जन केंद्रों में आद्रता मापी यंत्र से धान की आद्रता मापकर 17 प्रतिशत से कम आद्रता वाले धान ही खरीदे जायेंगे। धान की राशि का भुगतान कृषक द्वारा लिये गये ऋण के समायोजन के पश्चात् पीएफएमएस सिस्टम के माध्यम से किसान के खाते में ही किया जायेगा। किसानों से धान खरीदी ऑनलाइन काटे गये टोकन के आधार पर ही जायेगी। धान की खरीदी में लगने वाले बारदानों की पर्याप्त व्यवस्था कर ली गयी है। धान उपार्जन केंद्रों में धान की खरीदी बायोमेट्रिक आधारित होगी। किसान स्वयं या उसके द्वारा नामित एक नॉमिनी को खरीदी केंद्र में उपस्थित होकर बायोमेट्रिक एथेन्टिकेशन के आधार पर धान विक्रय कर सकेगा। नामिनी के रूप में किसान के परिवार के नामित सदस्य जैसे कि माता, पिता, पति, पत्नी, पुत्र, पुत्री, दामाद, पुत्रवधू, सगे भाई-बहन एवं अन्य करीबी रिश्तेदार को मान्य किया जायेगा। यदि इस आधार पर धान खरीदी विक्रय में कठिनाई आती है तो ट्रस्टेड पर्सन के द्वारा आधार प्रमाणीकरण कर ही धान विक्रय किया जा सकेगा। यदि आधार प्रमाणीकरण में किसी प्रकार की समस्या आती है तो अंतिम विकल्प के रूप में आधार से लिंक मोबाइल नंबर में ओटीपी भेजकर किसान अथवा नामांकित व्यक्ति का पहचान प्रमाणीकरण का विकल्प भी उपलब्ध रहेगा। जो कृषक विगत वर्ष पंजीयन कराने के बाद भी धान अपने खाते में नहीं बेच हैं उन्हें अपने क्षेत्र के अनुविभागीय अधिकारी राजस्व से अनुमति लेकर अपना धान उपार्जन केंद्र में विक्रय करना होगा।

धान निरीक्षण- प्रति उपार्जन केंद्र में प्रति सप्ताह शनिवार को उपार्जित किये धान की मात्रा का परीक्षण सहायक नोडल अधिकारी द्वारा मोबाइल ऐप के माध्यम से किया जायेगा। समर्थन मूल्य पर एफएक्यू क्वालिटी का धान खरीदा जायेगा। सीमावर्ती राज्यों से धान की आवक में रोक लगाने हेतु 10 अन्तर्राज्यीय बैरियर चेक पोस्ट बनाये गये हैं। खरीफ वर्ष 2024-25 में 14 नवंबर, 2024 से 30 अप्रैल, 2025 तक अन्य राज्यों से धान का आयात संचालक खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति की अनुमति से ही हो सकेगा। कोचियों एवं बिचौलियों के द्वारा समिति में धान लाकर अन्य किसानों के पंजीयन में खपाने का प्रयास करने पर उनका वाहन एवं धान जप्ती कर नियमानुसार कार्यवाही की जायेगी।

धान खरीदी की अवधि- 31 जनवरी तक होगी धान खरीदी खरीफ विपणन साल 2024-25 में समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन और कस्टम मिलिंग की नीति को अप्रूव किया गया। राज्य में खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 के दौरान समर्थन मूल्य पर राज्य के किसानों से नगद और लिंकिंग में धान खरीदी 14 नवम्बर से शुरू होकर 31 जनवरी 2025 तक धान खरीदी चलेगी।

सड़क के लिए दूसरे दिन भी आंदोलन पर ग्रामीण

मीडिया ऑडीटर, रायगढ़ एजेंसी। छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले के खम्हरिया में करीब 200 लोग विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। यह प्रदर्शन मिलुपारा से हुंकरडीपा चौक तक सड़क सुधार की मांग को लेकर है।

बुधवार से शुरू हुआ आंदोलन आज दूसरे दिन भी जारी है। दरअसल, तमनार विकासखंड के मिलुपारा से हुंकरडीपा तक करीब 12 किलोमीटर सड़क बेहद खराब है। इस कारण करीब 8-10 गांवों के लोगों को आने-जाने में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे में ग्रामीणों ने दूसरी बार इस सड़क के लिए आंदोलन शुरू किया है। बुधवार को करीब 11 बजे से ग्रामीण खम्हरिया साप्ताहिक बाजार में अपना विरोध जता रहे हैं। ऐसे में पुलिस अधिकारी भी उन्हें समझाने पहुंचे, लेकिन वे सुनने को तैयार नहीं थे। वे रात 9 बजे तक वहीं रहे और उसके बाद घर चले गए।

भरतपुर विकासखण्ड के धान उपार्जन केन्द्र जनकपुर में धान खरीदी का शुभारंभ

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। 14 नवंबर 2024 को भरतपुर विकासखण्ड के धान उपार्जन केन्द्र ग्राम जनकपुर में धान खरीदी का शुभारंभ किया गया। पीडीएस अध्यक्ष अरुण प्रताप सिंह ने कृषक लालजी का श्रीफल एवं फूल माला से धान उपार्जन केन्द्र में किया स्वागत। इस दौरान संतोष मिंज ब्रांच मैनेजर जनकपुर, सरपंच लालजी बैगा, गजराज सिंह एसएडीओ कृषि विभाग, एवं प्रभारी रोशन श्रीवास्तव उपस्थित थे। जनकपुर में धान खरीद हेतु कुल 04 चार टोकन जारी किया गया था। जिसमें 01 टोकन के माध्यम से प्रथम कृषक लालजी पिता कल्लू बैगा से धान खरीदी प्रारम्भ किया गया। लालजी के टोकन के माध्यम से लगभग 90 क्विंटल धान खरीदा गया। एवं आरती सिंह से 120 क्विंटल धान, रूपा जयसवाल से 12 क्विंटल धान और राजेन्द्र कुमार से 55.20 क्विंटल धान कुल 277 क्विंटल धान क्रय किया गया। समिति प्रबंधक एवं समस्त कर्मचारी सभी उपस्थित सम्मानीय लोगों के समकक्ष आज 14 नवंबर 2024 को धान खरीदी जनकपुर में शुभारंभ किया गया एवं चेक लिस्ट अनुसार धान खरीदी हेतु जनकपुर के प्रभारी एवं अधीनस्थ कर्मचारियों को निर्देशित किया।

प्रशासन ने उखाड़ा टेंट तो छतरी लेकर किया प्रदर्शन

नगरीय निकाय के कर्मचारियों की 6 सूत्रीय मांगों को लेकर हड़ताल, फेडरेशन ने किया समर्थन

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। बिलासपुर में छत्तीसगढ़ अधिकारी कल्याण संघ के बैनर तले नगरीय निकाय के अधिकारी-कर्मचारियों ने छह सूत्रीय मांगों को लेकर तीन दिवसीय हड़ताल शुरू कर दी है। हड़ताल के पहले ही दिन प्रशासन ने उनका पंडाल तोड़ दिया। जिससे नाराज कर्मचारी छाता लेकर धरना-प्रदर्शन पर बैठ गए। उनकी मांगों का कर्मचारी-अधिकारी फेडरेशन ने समर्थन किया है। उन्होंने भी पंडाल तोड़ने को दमनकारी नीति बताकर विरोध जताया।

दरअसल, नगरीय निकाय के कर्मचारी अपनी लंबित समस्या को लेकर परेशान हैं। कई बार नगरीय प्रशासन विभाग से अपनी समस्याएं बताने के बाद भी उनकी दिक्कतों को दूर नहीं किया गया और न ही मांगों को पूरा किया गया। जिस पर कर्मचारियों ने सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। कर्मचारियों ने बुधवार से तीन दिवसीय हड़ताल करने का ऐलान किया। जिसके बाद बुधवार की सुबह कर्मचारी विकास भवन के पास पंडाल लगाकर धरना-प्रदर्शन पर बैठ गए। इस दौरान प्रशासन की टीम ने उनका पंडाल उखाड़ दिया।

नाराज कर्मचारियों ने छतरी लेकर किया प्रदर्शन: प्रशासन की ओर से पंडाल उखाड़ने के बाद भी कर्मचारी धरना-प्रदर्शन पर अड़े रहे।

एमसीबी, कोरिया, अंबिकापुर, जीपीएम में योग्य उम्मीदवारों की तलाश

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। स्टेप अप फॉर इंडिया एनजीओ में क्षेत्रीय प्रबंधक की आवश्यकता है जिसके लिए रिक्तियां निकाली गयी है। इसके लिए शिक्षा और अनुभव इस प्रकार है। यह संस्था ऐसे उम्मीदवारों को प्राथमिकता देती हैं जिनके पास निम्नलिखित योग्यताएं हो। व्यवसाय, सामाजिक विज्ञान, शिक्षा या किसी संबंधित क्षेत्र में मास्टर डिग्री के साथ-साथ अंग्रेजी व हिंदी भाषा में अच्छी पकड़ हो। विविध दर्शकों के सामने प्रस्तुति देने का अनुभव हो।

निजी क्षेत्र की फर्मों, गैर सरकारी संगठनों, ट्रस्टों या फाउंडेशनों में समान भूमिका में 7-10 साल का कार्य करने का अनुभव हो। शिक्षा क्षेत्र का अनुभव (सरकारी शिक्षा क्षेत्र की समझ एक लाभ है)। अच्छे शोध कौशल के साथ डेटा विश्लेषण और रिपोर्टिंग करना आता हो। एमएस ऑफिस ऐप्स और फ़ाइल रिपोजिटरी प्रबंधन की अच्छी कमांड हो। वेतन 50 हजार (अनुभव के साथ बातचीत योग्य) संपर्क नम्बर उमेश 6361206424।

विमान की इमरजेंसी लैंडिंग, यात्रा कर रहे युवक ने कहा-बम है

जेल भेजा गया, अक्टूबर में 90 विमानों को मिली थी धमकी

मीडिया ऑडीटर, रायपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में इंडिगो की फ्लाइट की गुरुवार को इमरजेंसी लैंडिंग कराई गई। नागपुर से कोलकाता जा रही फ्लाइट में यात्रा कर रहे युवक ने क्रू मेंबर को बुलाकर बम होने की बात कही थी। युवक को पूछताछ के बाद अब जेल भेज दिया गया है।

जब क्रू मेंबर को उसने बम होने की बात कही तो फौरन इसकी सूचना पायलट को दी गई। इसके बाद पायलट ने एटीसी से बात कर रायपुर एयरपोर्ट से संपर्क कर इमरजेंसी लैंडिंग की परमिशन मांगी, जिसके बाद फ्लाइट को डायवर्ट कर एयरपोर्ट पर उतारा गया।

आरोपी नागपुर का रहने वाला है। इससे पहले अक्टूबर में भी 90 से ज्यादा विमानों को बम की धमकी मिली थी। बाद में ये सभी धमकी झूठी साबित हुईं। इन धमकियों की वजह से 200 करोड़ रुपए तक का नुकसान हुआ था।

कुछ देर प्रभावित रहीं उड़ानें: घटना की सूचना मिलते ही एयरपोर्ट पर सुरक्षा कड़ी कर दी गई और बम निरोधक दस्ते को बुलाया गया। यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकालकर विमान को तुरंत खाली कराया गया। सभी यात्री सुरक्षित हैं। हालांकि, रायपुर एयरपोर्ट पर कुछ देर के लिए उड़ानें प्रभावित रहीं।

नागपुर से कोलकाता जा रहा था युवक: माना थाना पुलिस और क्राइम ब्रांच की टीम युवक को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। वो कोलकाता जाने के लिए फ्लाइट में सवार हुआ था।

बम होने की सूचना झूठी निकली: रायपुर ग्रामीण एएसपी कीर्तन राठौर ने कहा कि फ्लाइट की जांच में कुछ नहीं मिला। विमान में सवार अनिमेष मंडल ने बम होने की झूठी सूचना दी थी। युवक के खिलाफ एविएशन एक्ट 1992 के प्रावधानों के अनुसार इंडिगो एयरलाइंस की तरफ से थाने में शिकायत दी गई है।

एयरपोर्ट के डायरेक्टर एसडी शर्मा ने बताया कि एयरपोर्ट में तैनात सीआईएसएफ और पुलिस की टीम ने यात्रियों को फ्लाइट से उतारा। सामानों और यात्रियों की चेकिंग के बाद विमान को वापस कोलकाता के लिए रवाना किया गया है।

खड़े ट्रक में घुसी एंबुलेंस, डॉक्टर-ड्रेसर की मौत

दंतेवाड़ा से मरीज को लेकर जगदलपुर मेडिकल कॉलेज जा रही थी; ड्राइवर और पेशेंट जख्मी

मीडिया ऑडीटर, जगदलपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के जगदलपुर-बीजापुर नेशनल हाईवे-63 पर एक एंबुलेंस सड़क किनारे खड़े ट्रक के पीछे जा घुसी। गुरुवार सुबह हुए हादसे में डॉक्टर और ड्रेसर की मौत हो गई, जबकि मरीज और ड्राइवर घायल हैं। दोनों घायलों को डिमरापाल मेडिकल कॉलेज लाया गया है। घटना कोडेनार थाना क्षेत्र की है।

जानकारी के मुताबिक, दंतेवाड़ा जिले के किरंदुल परियोजना अस्पताल से एक मरीज को जगदलपुर के डिमरापाल मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया था। मरीज को एंबुलेंस के माध्यम से लाया जा रहा था। जिसमें चालक, मरीज, एक डॉक्टर और ड्रेसर भी थे।

एंबुलेंस के परखच्चे उड़ गए: तेज रफ्तार एंबुलेंस ने गुरुवार सुबह करीब 5 से 6 बजे के बीच किलेपाल में सड़क किनारे खड़े एक ट्रक को पीछे से टक्कर मार दी। हादसा इतना जबरदस्त था कि, एंबुलेंस के परखच्चे उड़ गए। वहीं, एंबुलेंस का चालक और मरीज घायल हो गए। जबकि सामने सीट पर बैठे डॉक्टर और ड्रेसर की मौके पर ही मौत हो गई।

कड़ी मशक्कत कर निकाला गया शव: इस मामले की जानकारी तत्काल पुलिस को मिली, तो जवान मौके पर पहुंचे। जिसके बाद ट्रैक्टर की मदद से एंबुलेंस को हटाया गया। कटर से एंबुलेंस की बॉडी को काटकर मृतकों को बाहर निकाला गया। वहीं घायलों और मृतकों के शवों को मेडिकल कॉलेज लाया गया है। दोनों घायलों का इलाज जारी है।

कोड़ेनार थाना प्रभारी ने बताया कि, मृतकों के नामों की जानकारी अभी नहीं मिल पाई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

मणिपुर के 6 इलाकों में एएफएसपीए फिर से लागू

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर के 5 जिलों के 6 थानों में फिर से आर्म्ड फोर्सेस स्पेशल प्रोटेक्शन एक्ट लागू कर दिया गया है। यह 31 मार्च 2025 तक प्रभावी रहेगा। गृह मंत्रालय ने गुरुवार को इसका आदेश जारी किया। मंत्रालय ने कहा कि इन इलाकों में बिगड़ती सुरक्षा स्थिति के चलते फैसला लिया गया। एएफएसपीए लागू होने से सेना और अर्ध-सैनिक बल इन इलाकों में कभी भी किसी को भी पूछताछ के लिए हिरासत में ले सकते हैं। गृह मंत्रालय के आदेश में इम्फाल पश्चिम जिले का सेकमई और लमसांग, इम्फाल पूर्व जिले का लाम्लाई, जिरिबाम जिले का जिरिबाम, कांगपोकपी का लेइमाखोंग और बिष्णुपुर जिले का मोइरंग थाना शामिल है।स्नस्क्क में बिना वारंट गिरफ्तारी का अधिकार एएफएसपीए को केवल अशांत क्षेत्रों में लागू किया जाता है। इन जगहों पर सुरक्षाबल बिना वारंट के किसी को भी गिरफ्तार कर सकते हैं। कई मामलों में बल प्रयोग भी हो सकता है। पूर्वोत्तर में सुरक्षाबलों की सहूलियत के लिए 11 सितंबर 1958 को यह कानून पास किया गया था। 1989 में जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद बढ़ने पर यहां भी 1990 में एएफएसपीए लागू कर दिया गया। अशांत क्षेत्र कौन-कौन से होंगे, ये भी केंद्र सरकार ही तय करती है। अब राज्य के 13 इलाकों में एएफएसपीए लागू नहीं केंद्र सरकार के इस आदेश के बाद अब राज्य के 13 इलाके ही एएफएसपीए से बाहर हैं। इससे पहले 1 अक्टूबर को मणिपुर सरकार ने इम्फाल, लाम्फल, सिटी, सिंगजमई, सेकमई, लमसांग, पटसोई, वांगोई, पोरोमपाट, हेइंगांग, लाम्लाई, इरिलबंग, लेइमाखोंग, थौबाल, बिश्नुपुर, नंबोल, मोइरंग, काकचिंग, और जिरिबाम को एएफएसपीए से बाहर रखा था।

दिल्ली में स्मॉग, 300 से ज्यादा फ्लाट्स लेट

दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में गुरुवार को एयर क्वालिटी गंभीर श्रेणी में पहुंच गई। गुरुवार सुबह 6 बजे दिल्ली के 31 इलाकों में प्रदूषण बेहद खराब श्रेणी से गंभीर श्रेणी में पहुंच गया। सबसे ज्यादा एयर क्वालिटी इंडेक्स 567 जहांगीरपुरी में दर्ज किया गया। वहीं, पंजाबी बाग में 465 और आनंद विहार में 465 एक्यूआई दर्ज किया गया। वेबसाइट फ्लाइटट्रेडर 24 के मुताबिक, धुंध (स्मॉग) के चलते दिल्ली एयरपोर्ट पर 300 से ज्यादा फ्लाइट्स में देरी हुई। गुरुवार दोपहर बजे तक दिल्ली में 115 फ्लाइट आईं और 226 फ्लाइट का डिपार्चर हुआ। जानकारी के मुताबिक, फ्लाइट अराइवल में 17 मिनट, वहीं डिपार्टर में 54 मिनट की देरी हुई। भारी कोहरे की वजह से बुधवार को आईजीआई एयरपोर्ट पर 10 फ्लाइट डायवर्ट की गई थीं। दिल्ली एयरपोर्ट ने ङ्क पर लिखा- एयरपोर्ट पर विजिबिलिटी कम है। हमारा यात्रियों से निवेदन है कि फ्लाइट के आने-जाने के संबंध में संबंधित एयरलाइन से अपडेट ले लें।

प्रधानमंत्री प्रदेश के 2 जनजातीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संग्रहालयों का करेंगे लोकार्पण-मुख्यमंत्री

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी 15 नवम्बर को बिहार के जमुई में राष्ट्रीय जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में शामिल होंगे। प्रधानमंत्री श्री मोदी कार्यक्रम में मध्यप्रदेश के 2 जनजातीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संग्रहालयों का वर्चुअली लोकार्पण करेंगे। प्रधानमंत्री श्री मोदी छिंदवाड़ा के श्री बादल भोई जनजातीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संग्रहालय एवं जबलपुर के राजा शंकर शाह और रघुनाथ शाह स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संग्रहालय को राष्ट्र को समर्पित

करेंगे। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री श्री मोदी ने 15 अगस्त 2016 को देश के विभिन्न प्रदेशों में जनजातीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को समर्पित संग्रहालय के निर्माण की घोषणा की गई थी। छिंदवाड़ा शहर में स्थित श्री बादल भोई जनजातीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संग्रहालय भवन का निर्माण 40 करोड़ 69 लाख रूपये की लागत से लोक निर्माण विभाग द्वारा किया गया है। यहां क्यूरेशन का कार्य जनजातीय कार्य विभाग के अधीन वन्या संस्थान द्वारा किया गया है। इसका निर्माण पुराने जनजातीय संग्रहालय की उपलब्ध भूमि पर ही किया गया है।

ईडी की महाराष्ट्र-गुजरात में 23 जगहों पर छापेमारी

मुंबई (एजेंसी)। प्रवर्तन निदेशालय ने गुरुवार को मालेगांव के व्यापारी के खिलाफ मनी लॉन्ड्रिंग केस की जांच के तहत महाराष्ट्र और गुजरात में कई जगहों पर छापेमारी की। ईडी का दावा है कि व्यापारी ने 100 करोड़ रुपए से ज्यादा का लेन-देन करने के लिए कई लोगों के बैंक खातों का दुरुपयोग किया है।

पीएमएलए के तहत हो रही इस कार्रवाई में महाराष्ट्र के मालेगांव, नासिक और मुंबई में और गुजरात के अहमदाबाद- सूरत में कुल 23 परिसरों की तलाशी ली जा रही है। छापेमारी महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, ओडिशा और पश्चिम बंगाल में 2,500 से ज्यादा लेन-देन और करीब 170 बैंक शाखाएं जांच के दायरे में हैं। इन खातों से या तो पैसा जमा किया गया या निकाला गया है।

मामला मालेगांव में व्यापारी सिराज अहमद हारुन मेमन के खिलाफ पुलिस में दर्ज की गई स्नङ्कक्र से जुड़ा है। शिकायतकर्ता वह व्यक्ति है जिसके बैंक खाते से अवैध लेनदेन किया गया था। आरोप है कि बैंक अकाउंट का इस्तेमाल चुनावी फंडिंग और वोट जिहाद के लिए किया गया था। महाराष्ट्र में 288 विधानसभा सीटों के लिए 20 नवंबर को वोटिंग होना है। इससे पहले ईडी की जांच को बड़ी कार्रवाई माना जा रहा है।

मोदी बोले- महायुति में ही महाराष्ट्र की तरक्की

मुंबई (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आज महाराष्ट्र में तीन रैलियां हैं। छत्रपति संभाजीनगर में पहली रैली में उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र का ये चुनाव सिर्फ नई सरकार चुनने का ही चुनाव नहीं है। इस चुनाव में एक तरफ संभाजी महाराज को मानने वाले देशभक्त हैं और दूसरी ओर औरंगजेब के गुणगान करने वाले लोग हैं। कुछ लोगों को छत्रपति संभाजी के कातिलों में मसीहा नजर आता है। उन्होंने कहा कि पूरा महाराष्ट्र जानता है कि छत्रपति संभाजी नगर को ये नाम देने की मांग बालासाहेब ठाकरे ने उठाई थी। अघाड़ी सरकार की 2.5 साल सत्ता रही, लेकिन कांग्रेस के दबाव में इन लोगों की हिम्मत नहीं हुई। जबकि महायुति सरकार ने आते ही इस शहर का नाम छत्रपति संभाजी नगर किया। हमने आपकी इच्छा को पूरा किया, हमने बालासाहेब ठाकरे की इच्छा को पूरा किया। छत्रपति संभाजीनगर के बाद पनवेल में मोदी की जनसभा जारी है। पीएम की दिन की आखिरी

जनसभा मुंबई में शाम 6.30 बजे होगी। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के लिए सभी 288 विधानसभा सीटों पर सिंगल फेज में 20 नवंबर को वोटिंग है। इसके नतीजे 23 नवंबर को आएंगे। भाजपा और महायुति मिलकर महाराष्ट्र को विकसित बनाने के लिए काम कर रहे हैं, ताकि महाराष्ट्र विकसित भारत के विजन का नेतृत्व कर सके।

अब ओवैसी ने 15 मिनट का जिक्र किया

सोलापुर (एजेंसी)। ओवैसी को नोटिस मिलने का यह पहला मामला नहीं है। उन्हें लोकसभा चुनाव 2024 के दौरान भी वाराणसी में हेट स्पीच के लिए नोटिस मिला था। हैदराबाद के सांसद और एआइएमआइएम चीफ असदुद्दीन ओवैसी ने महाराष्ट्र के सोलापुर में बुधवार को चुनाव प्रचार के दौरान 15 मिनट का जिक्र किया। 2012 में उनके भाई अकबरुद्दीन ओवैसी ने कहा था- देश से 15 मिनट के लिए पुलिस हटा दो तो पता चल जाएगा कौन कितना ताकतवर है। महाराष्ट्र

चुनाव में ओवैसी और डिप्टी ष्टरू फडणवीस के बीच जुबानी जंग चल रही है। सोलापुर में पुलिस ने मंच पर ही ओवैसी को भड़काऊ भाषण देने से बचने का नोटिस थमा दिया। इस पर तंज कसते हुए ओवैसी ने फिर 15 मिनट का जिक्र किया। हालांकि, तुरंत बाद उन्होंने गुस्ताखी होने की एक्टिंग की। फिर कहा- वैरी सॉरी...। ओवैसी ने अपनी बात को संभाला। मोबाइल और घड़ी दिखाते हुए बोले- 9.45... मीडिया वालों घड़ी चेक कर लो तुम्हारी भी। ओवैसी ने 15 मिनट को चुनाव प्रचार के टाइम खत्म होने में 15 मिनट बाकी होने से जोड़ दिया। ओवैसी सोलापुर में पार्टी प्रत्याशी फारूक शाबदी के प्रचार के लिए पहुंचे थे।

बाबा सिद्दीकी का शूटर 30 मिनट अस्पताल के पास रहा

मुंबई (एजेंसी)। एनसीपी नेता बाबा सिद्दीकी के शूटर ने मौत की पुष्टि तक अस्पताल के पास इंतजार किया। शूटर ने पुलिस को बताया कि फायरिंग के बाद उसने तुरंत अपनी शर्ट बदल ली और करीब आधे घंटे तक भीड़ के बीच अस्पताल के बाहर खड़ा रहा। वह यह जानने के लिए खड़ा रहा कि सिद्दीकी की मौत हो गई या वे हमले में बच गए। जैसे ही उसे यह पता चला कि सिद्दीकी की हालत बहुत गंभीर है, वह वहां से चला गया। 12 अक्टूबर की रात बाबा सिद्दीकी की हत्या हुई 66 वर्षीय बाबा सिद्दीकी की 12 अक्टूबर को रात 9ः11 बजे मुंबई के बांद्रा में गोली मारकर हत्या कर दी गई। उनके बेटे के ऑफिस के बाहर उनपर गोलियां चलाई गई। उनके सीने पर दो गोलियां

लगी थीं। उन्हें लीलावती अस्पताल ले जाया गया, जहां उनका निधन हो गया। सिद्दीकी की हत्या के लिए कैसे बनाया गया प्लान मुख्य आरोपी शिव कुमार गौतम के अनुसार, बाबा सिद्दीकी को मारने के बाद उनका पहला प्लान था।

4 दिन में तीसरी बार उद्धव के सामान की चेकिंग

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में चुनाव आयोग की सख्ती जारी है। अफसरों ने गुरुवार को कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, गोवा के सीएम प्रमोद सावंत, महाराष्ट्र कांग्रेस अध्यक्ष नाना पटोले और उद्धव ठाकरे के सामानों की चेकिंग की। इस तरह चुनाव के बीच देश के 8 बड़े नेताओं की जांच हो चुकी है। खड़गे नासिक में चुनाव प्रचार के लिए पहुंचे थे। हैलिपेड पर उनकी जांच की वीडियोग्राफी भी हुई। गोंदिया में महाराष्ट्र कांग्रेस अध्यक्ष नाना पटोले के हेलिकॉप्टर और बैग की जांच की गई। वे गोरेगांव विधानसभा सीट पर एनसीपी(एसपी) उम्मीदवार के लिए प्रचार करने जा रहे थे। उद्धव ठाकरे की तीसरी बार अहमदनगर में जांच हुई। इस तरह कराड एयरपोर्ट (सातारा) पर गोवा के सीएम प्रमोद सावंत का सामान भी चेक हुआ। महाराष्ट्र भाजपा ने बुधवार को एक्स पर एक वीडियो पोस्ट किया था जिसमें सुरक्षाकर्मी डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस के सामान की चेकिंग करते नजर आ रहे हैं। पार्टी ने बताया था कि वीडियो 5 नवंबर को कोल्हापुर एयरपोर्ट का है। पार्टी ने दावा किया था कि इससे पहले 7 नवंबर यवतमाल जिले में भी उनके सामान की जांच हुई थी।

यूपीपीएससी ने दो शिफ्ट में परीक्षा का फैसला वापस लिया

प्रयागराज (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश पब्लिक सर्विस कमीशन की प्रोविंशियल सिविल सर्विस की प्रारंभिक परीक्षा अब एक शिफ्ट में होगी। 20 हजार छात्रों के आंदोलन के बाद कमीशन को 10 दिन में ही फैसला वापस लेना पड़ा।

यूपीपीएससी ने गुरुवार,14 नवंबर को 2 शिफ्ट में परीक्षा का फैसला वापस ले लिया। यह फैसला 5 नवंबर को ही लिया गया था। प्रदर्शन कर रहे छात्रों ने कहा कि आरओ-एआरओ परीक्षा पर फैसला होने तक वे आंदोलन जारी रखेंगे। प्रयागराज में यूपीपीएससी ऑफिस के सामने छात्र एक शिफ्ट में परीक्षा कराने की मांग को लेकर 11 नवंबर से प्रदर्शन कर रहे हैं। आयोग के सचिव अशोक कुमार आज दोपहर करीब 4 बजे कार्यालय से बाहर आए। हूटिंग होने लगी तो फिर अंदर चले गए। फिर लाउडस्पीकर पर अनांउस किया- यूपीपीएससी एक दिन में प्रारंभिक परीक्षा कराएगा। यूपीपीएससी ने कहा, समीक्षा अधिकारी/सहायक समीक्षा अधिकारी परीक्षा -2023 के लिए आयोग एक कमेटी बनाएगा।

सीजेआई संजीव खन्ना ने बनाया नया रोस्टर रिस्टम

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट के 51वें सीजेआई संजीव खन्ना ने मामलों की सुनवाई को लेकर बनाए जाने वाले रोस्टर में बदलाव किया है। 11 नवंबर को पद संभालने के बाद सीजेआई खन्ना ने फैसला लिया कि सीजेआई और दो सीनियर जजों की अध्यक्षता वाली पहली तीन बेंच लेटर पिटीशन और जनहित याचिकाओं की सुनवाई करेंगी। केस अलॉटमेंट के नए रोस्टर के तहत सुप्रीम कोर्ट को लिखे लेटर पर आधारित याचिकाओं और

सीजेआई की सुनवाई सीजेआई खन्ना, जस्टिस बीआर गवई और जस्टिस सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली बेंच करेंगी। पूर्व सीजेआई यूयू ललित सभी 16 बेंच को जनहित याचिकाएं सुनवाई के लिए अलॉट कर रहे थे। हालांकि उनके उत्तराधिकारी रहे सीजेआई चंद्रचूड़ ने इस प्रथा को बंद कर दिया था। लेटर पिटीशन और पीआईएल के अलावा, सबजेक्ट के आधार पर ष्टछ्ठड्ड की बेंच ज्यादातर मुद्दों पर सुनवाई करेगी। इसमें सामाजिक न्याय, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति के चुनाव से जुड़े विवाद, सांसदों और विधायकों के चुनाव से जुड़े मामले, बंदी प्रत्यक्षीकरण और मध्यस्थता के मामले शामिल हैं।

हरियाणा विधानसभा सत्र-सीएम बोले- विपक्ष ने नेता नहीं चुना, ऊपर से लेटर नहीं आया

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा विधानसभा सत्र के दूसरे दिन की कार्यवाही जारी है। जिसमें सीएम नायब सैनी राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय के अभिभाषण पर बोल रहे हैं। इस दौरान सीएम ने तंज कसा कि विपक्ष का नेता नहीं बना। ऊपर से लेटर नहीं आया। यह सुनकर पूर्व सीएम भूपेंद्र हुड्डा ने पंजाबी में जवाब दिया कि बणे ना बणे, तुहानूं

की (बने या न बने, आपको क्या)। सीएम ने कैथल विधायक आदित्य सुरजेवाला को भी नसीहत दे डाली कि वह पिता रणदीप सुरजेवाला के पदचिन्हों पर न चलें। इससे पहले दादरी से भाजपा विधायक सुनील सांगवान ने कांग्रेस की हार पर कहा कि कसूर ईवीएम का नहीं, एक भावी मुख्यमंत्री का था। जो पूरे हरियाणा में 1 हजार थानेदार लिए घूम रहा था। पहले तो गुलाबी गैंग थी, लेकिन अबकी बार एक नई गैंग आई, किलकिमार गैंग। इस गैंग के 1 हजार लड़के पूरे हरियाणा में घूम रहे थे।

तमिलनाडु में डॉक्टरों की हड़ताल से सरकारी अस्पतालों में ओपी सेवाएं प्रभावित

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु के कलैगनार सेंटेनरी मल्टी स्पेशियलिटी अस्पताल में ड्यूटी पर एक डॉक्टर की चाकू घोंपकर हत्या किए जाने की घटना और पर्याप्त सुरक्षा की मांग को लेकर विभिन्न डॉक्टर संगठनों की हड़ताल के कारण गुरुवार को राज्य के विभिन्न सरकारी अस्पतालों में बाह्य मरीज सेवाएं प्रभावित हुईं। तमिलनाडु गवर्नमेंट डॉक्टर्स एसोसिएशन (टीएनजीडीए) और फेडरेशन ऑफ गवर्नमेंट डॉक्टर्स एसोसिएशन (एफजीडीए) के प्रति निष्ठा रखने वाले डॉक्टर सांकेतिक विरोध के रूप में ओपी सेवाओं का बहिष्कार करके हड़ताल में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि उनका आंदोलन तब तक जारी रहेगा जब तक कि उनकी मांगों को सरकार मान नहीं लेती है, जिसमें अस्पतालों को सुरक्षित क्षेत्र घोषित करने, आईसीयू

में पुलिस कर्मियों की तैनाती और सरकारी अस्पतालों में कैजुअल्टी वार्ड और उनकी सुरक्षा के लिए पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था शामिल है।

भारतीय चिकित्सा संघ तमिलनाडु चैप्टर के अनुसार, पूरे राज्य के सरकारी और 8,000 निजी अस्पतालों के लगभग 45,000 डॉक्टर हड़ताल पर हैं। हड़ताल के बाद आपातकालीन मामलों और सर्जरी को छोड़कर, अन्य सभी चिकित्सा सेवाएं प्रभावित हुईं।

यह सांकेतिक हड़ताल स्वास्थ्य मंत्री मा. सुब्रमण्यम की बुधवार रात की घोषणा की पृष्ठभूमि में हुई है कि सरकार द्वारा उनकी मांगों पर विचार करने पर सहमति के बाद डॉक्टर संघों ने अपनी हड़ताल वापस लेने का फैसला किया है। इस बीच, सभी सरकारी अस्पतालों में सुरक्षा कड़ी कर दी गई और अस्पतालों में प्रवेश करने वाले सभी लोगों की गहन तलाशी ली गई। गौरतलब है कि वरिष्ठ ऑन्कोलॉजिस्ट डॉ. बालाजी जगन्नाथन को एक व्यक्ति ने चाकू मार दिया था, जिसकी मां का अस्पताल में कैंसर के उन्नत चरण का इलाज चल रहा था। उसने गलत इलाज का आरोप लगाते हुए डॉक्टर पर हमला किया था क्योंकि उसकी मां की हालत खराब होने लगी थी और कैंसर उसके फेफड़ों में फैल गया था।

राहुल बोले- मोदी ने संविधान नहीं पढ़ा

मुंबई (एजेंसी)। राहुल ने गुरुवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कभी संविधान पढ़ा नहीं है, इसलिए उन्हें लगता है कि संविधान की लाल किताब खाली है। वे महाराष्ट्र के नंदुरबार में रैली को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान संविधान की प्रति दिखाते हुए उन्होंने कहा- भाजपा को किताब का लाल रंग पसंद नहीं, लेकिन हमें इसकी परवाह नहीं कि रंग लाल है या नीला। हम इसे (संविधान) बचाने के लिए अपनी जान भी देने को तैयार हैं। दरअसल, चुनाव प्रचार के दौरान भाजपा नेताओं ने राहुल गांधी द्वारा दिखाई जाने वाली लाल किताब को शहरी नक्सलवाद से जोड़ने की कोशिश की थी। पीएम मोदी ने भी 9 नवंबर को तंज किया था कि राहुल गांधी संविधान की जो किताब लेकर घूम रहे हैं, उसके पन्ने खाली हैं। राहुल बोले- सरकार चलाने वाले 90 अधिकारियों में से केवल 1 आदिवासी

आदिवासी आबादी के पास संसाधनों में सिर्फ 1 प्रतिशत हिस्सेदारी है। भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आदिवासियों को वनवासी कहकर उनका अपमान करते हैं।

आदिवासी देश के पहले मालिक हैं। जल, जंगल और जमीन पर पहला हक उनका है, लेकिन भाजपा चाहती है कि आदिवासी बिना किसी अधिकार के जंगल में रहें। उन्होंने दावा किया कि सरकार चलाने वाले 90 अधिकारियों में से केवल एक आदिवासी समुदाय से है। इन्हें देश के विकास में खर्च के लिए अगर 100 रुपए मिलते हैं तो आदिवासी अधिकारी के हिस्से केवल 10 पैसे आते हैं। देश में 100 नागरिकों में आठ आदिवासी हैं, जबकि भागीदारी 100 रुपए में सिर्फ 10 पैसे है। आदिवासी अधिकारी को अच्छे विभाग भी नहीं दिए जाते। राहुल गांधी ने झारखंड के बाघमारा और जमशेदपुर में कहा- मोदी जी अंबानी की शादी में जाते हैं, लेकिन किसी गरीब के यहां शादी में नहीं जाते। एक बार मैंने देखा कि वे तार के पीछे खड़े गरीब बच्चों से झिझककर मिले रहे थे। हिंदुस्तान के प्रधानमंत्री गरीबों, किसानों, दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों के पास जाते ही नहीं हैं। इससे पता चलता है कि वो आपके नहीं हैं।

चैंपियंस ट्रॉफी पर मचे बवाल के बीच ये क्या बोल गए मोहम्मद रिजवान ?

नई दिल्ली (एजेंसी)। चैंपियंस ट्रॉफी 025 के लिए अब कुछ ही महीने बचे हैं इसका आयोजन अगले साल फरवरी-मार्च में होना है। लेकिन अभी तक इस आईसीसी टूर्नामेंट के वेन्यू को लेकर कोई फैसला नहीं हो पाया है। दरअसल, चैंपियंस ट्रॉफी की मेजबानी पाकिस्तान को करनी है जिसके लिए भारतीय क्रिकेट बोर्ड ने साफ कर दिया है कि भारतीय टीम पाकिस्तान जाकर नहीं खेलेगी। इस मामले में पाकिस्तान में हल्ला मचा हुआ है, वहीं पीसीबी भी अड़ा हुआ है कि इस बार सारे मैच पाकिस्तान में ही खेले जाएंगे। वहीं इस मुद्दे पर साउथ अफ्रीका दौरे पर गई टीम इंडिया के कप्तान सूर्यकुमार यादव से एक पाकिस्तान फैन ने पूछा कि वह पाकिस्तान क्यों नहीं आते खेलने के लिए तो इस पर सूर्या ने जवाब दिया था कि ये हमारे हाथ में नहीं है। वहीं जब पाकिस्तान के वनडे कप्तान मोहम्मद रिजवान से भी चैंपियंस ट्रॉफी को लेकर सवाल किया गया तो उन्होंने भी इसे पीसीबी पर छोड़ दिया। मौजूदा समय में पाकिस्तान क्रिकेट टीम ऑस्ट्रेलिया में है, जहां उसने तीन मैचों की वनेड सीरीज 2-1 से जीती और अब तीन मैचों की टी20 सीरीज खेली जानी है। बुधवार को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी20 सीरीज से पहले गाबा में प्रेस कॉन्फ्रेंस हुई तो रिजवान से चैंपियंस ट्रॉफी को लेकर कहा कि, केएल राहुल, सूर्यकुमार यादव का स्वागत है। जो भी खिलाड़ी आएंगे, हम उनका स्वागत करेंगे।

शाहीन अफरीदी फिर बने नंबर 1 वनडे गेंदबाज

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी ने बुधवार को वनडे और टी20 की ताजा रैंकिंग जारी की है। पाकिस्तान के स्टार तेज गेंदबाज शाहीन अफरीदी एक बार फिर नंबर-1 वनडे गेंदबाज बन गए हैं। उन्होंने साउथ अफ्रीका के स्पिनर केशव महाराज से बादशाहत छीनी है। वह तीन पायदान के फायदे के साथ टॉप पर काबिज हुए हैं। वहीं महाराज तीसरे नंबर पर खिसक गए हैं। वहीं भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज संजू सैमसन को भी इस रैंकिंग में फायदा हुआ है। शाहीन ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वनडे सीरीज में बेहतरीन प्रदर्शन किया। उन्होंने तीन मैचों में 12.62 की औसत से 8 विकेट चटकाए। उन्होंने इससे पहले वनडे वर्ल्ड कप 2023 के दौरान नंबर-1 रैंकिंग हासिल की थी। वहीं शाहीन के हमवतन हारिस राऊफ 14 स्थान के सुधार के साथ 13वें पर आ गए हैं। दूसरी तरफ पाकिस्तान के पेसर नसीम शाह ने भी अपने करियर की नई सर्वश्रेष्ठ रेटिंग हासिल की है। वह 14 स्थान ऊपर चढ़कर 55वें पर पहुंच गए हैं। वहीं वनडे बल्लेबाजों की सूची की बात करें तो पाकिस्तान के बाबर आजम टॉप पर बरकरार हैं। वहीं भारत के विकेटकीपर बल्लेबाज संजू सैमसन ने टी20 बैटिंग रैंकिंग में लंबी छलांग लगाई है। सैमसन 27 पायदान ऊपर चढ़कप 39वें स्थान पर आए हैं। भारत और साउथ अफ्रीका के बीच चार मैचों की टी20 सीरीज खेली जा रही है, इसमें दोनों टीमें फिलहाल 1-1 की बराबरी पर है। सैमसन ने पहले मैच में शतक ठोका था लेकिन वह दूसरे मुकाबले में शून्य पर पवेलियन लौटे। भारत के रवि बिश्नोई गेंदबाजों की रैंकिंग में टॉप 10 में जगह मिली है। वह सातवें स्थान पर हैं।

पर्थ टेस्ट में कमेंट्री नहीं करेंगे पोंटिंग-लैंगर

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग और उनके साथ जस्टिन लैंगर भारत के खिलाफ 22 नवंबर से शुरू हो रहे पर्थ टेस्ट में कमेंट्री नहीं कर पाएंगे। दरअसल, वे अपने आईपीएल टीमों के साथ 24 और 25 नवंबर को जेद्दा में होने वाला मेगा नीलामी के लिए मौजूद रहेंगे। ऑस्ट्रेलियाई अखबार द एज के मुताबिक वहां के आधिकारिक ब्रॉडकास्टर चैनल सेवन पर नहीं दिखेंगे। इससे ऑस्ट्रेलियाई टीम को नुकसान हो सकता है। टीम आगामी बॉर्डर-गावस्कर सीरीज के शुरुआती मैच में एक अहम बैकरूम कोच खो सकती है। पंजाब किंग्स के मुख्य कोच नियुक्त किए गए रिकी पोंटिंग और लखनऊ सुपर जायंट्स के कोच लैंगर को आईपीएल नीलामी में ऑस्ट्रेलियाई टीम के सहायक कोच डेनियल विटोरी के साथ शामिल हो सकते हैं। विटोरी सनराइजर्स हैदराबाद के कोच हैं। द एज कि रिपोर्ट के अनुसार, अगर सेवन क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया के सामने भारत के शक्तिशाली क्रिकेट अधिकारियों के खिलाफ अपने हितों की रक्षा करने में कामयाब नहीं होता है तो पोंटिंग, लैंगर और ऑस्ट्रेलियाई सहायक कोच विटोरी पर्थ टेस्ट में नहीं होंगे।

अइन स्पिनर्स पर बरस सकता है करोड़ों रुपये, इस लिस्ट में 3 विदेशी खिलाड़ी भी शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। नवंबर का महीना क्रिकेट और आईपीएल फैंस के लिए किसी त्योहार से कम नहीं होने वाला है। दरअसल, इसी महीने की 24 और 25 तारीख को साऊदी के जेद्दा में दुनिया भर के कई खिलाड़ियों के नाम पर बोली लगेगी। इसके लिए सभी फ्रेंचाइजीस ने तैयारियां शुरू कर दी हैं। वहीं इस मेगा ऑक्शन से पहले सभी 10 टीमें रिटने किए गए खिलाड़ियों की सूची बीसीसीआई को सौंप चुका है। लेकिन कई खिलाड़ी ऐसे भी रहे जिनका आईपीएल में बेहतरीन प्रदर्शन रहा लेकिन उन्हें टीमों ने रिलीज कर दिया। आईपीएल इतिहास में युजवेंद्र चहल सबसे ज्यादा सफल गेंदबाज हैं। वह सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज हैं, जिन्होंने 7.84 की इकॉनमी और 22.45 अब तक 205 मैच में 160 विकेट लिए हैं। वह राजस्थान रॉयल्स के साथ 2022 से जुड़े थे, लेकिन इस बार फ्रेंचाइजी ने उन्हें रिलीज कर दिया। युजवेंद्र चहल आईपीएल में इससे पहले 2014 से 2021 तक रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु का हिस्सा रहे थे।

रविचंद्रन अश्विन आईपीएल के इतिहास में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाजों की सूची में छठे नंबर पर हैं। उन्होंने 7.12 की इकॉनमी और 29.83 के औसत से अब तक 212 मैच में 180 विकेट झटके हैं। अश्विन 2022 से राजस्थान रॉयल्स से जुड़े थे, लेकिन इस बार फ्रेंचाइजी ने उन्हें रिलीज कर दिया। अश्विन इससे पहले सीएसके, राइजिंग सुपर जायंट्स, किंग्स इलेवन पंजाब और दिल्ली कैपिटल्स के लिए खेल चुके हैं। वाशिंगटन सुंदर आईपीएल के इतिहास में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाजों की लिस्टी में 99वें नंबर पर हैं। उन्होंने 7.54 की इकॉनमी और 35.81 के औसत से अब तक

60 मैच में 37 विकेट लिए हैं।

वाशिंगटन सुंदर आईपीएल 2022 से सनराइजर्स हैदराबाद के साथ जुड़े थे, लेकिन इस बार फ्रेंचाइजी ने उन्हें रिलीज कर दिया। वाशिंगटन सुंदर आईपीएल में इससे पहले राइजिंग पुणे सुपरजायंट और आरसीबी के लिए भी खेल चुके हैं। वहीं वानिंदु हसरंगा आईपीएल के इतिहास में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाजों की सूची में 103वें नंबर पर हैं। उन्होंने 8.13 की इकॉनमी और 21.37 के औसत से अब तक 26 मैच में 35 विकेट लिए हैं। वानिंदु हसरंगा आईपीएल 2024 में सनराइजर्स हैदराबाद के साथ जुड़े थे, लेकिन चोटिल होने के कारण पूरे टूर्नामेंट से बाहर हो गए थे। इस बार फ्रेंचाइजी ने उन्हें रिलीज कर दिया। इससे पहले वो आरसीबी से जुड़े थे।

आईपीएल 2023 में पंजाब किंग्स हरप्रीत बरार खेले थे लेकिन इस बार प्रीति जिंटा की टीम ने उन्हें रिलीज कर दिया। हरप्रीत बरार ने आईपीएल इतिहास में काफी विकेट लिए हैं, वह ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाजों की लिस्ट में 136वें नंबर पर हैं। उन्होंने 7.91 की इकॉनमी और 35.80 के औसत से अब तक 41 मैच में 25 विकेट अपने नाम किए हैं। आईपीएल 2019 से आईपीएल 2024 तक वो पंजाब के साथ ही थे। इसके अलावा हरप्रीत 233 रन भी बना चुके हैं।

नूर अहमद ने आईपीएल इतिहाल में 8.04 की इकॉनमी और 27.46 के औसत से अब तक 23 मैच में 24 विकेट झटके हैं।

इस पूर्व ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी ने की भविष्यवाणी

कहा- पर्थ टेस्ट मैच में भारत को 4 दिन में हरा देगी ऑस्ट्रेलिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व ऑलराउंडर ब्रैंडन जूलियन ने फॉक्स क्रिकेट पर कहा कि, मुझे लगता है कि भारत बहुत ज्यादा दबाव में है। कप्तान उपलब्ध नहीं हैं, मध्यक्रम में विराट की फॉर्म खराब चल रही है। कोच गंभीर बाहर आकर अपने सीनियर खिलाड़ियों का बचाव करने की कोशिश कर रहे हैं। जब कोई कोच ऐसा करता है तो आपको पता चल जाता है कि वहां थोड़ी परेशानी है। मुझे लगता है कि वे बहुत ज्यादा दबाव में हैं। मुझे लगता है कि ऑस्ट्रेलियाई टीम उन्हें पर्थ में हरा देगी। हमने उनके खिलाफ पिचली चार सीरीज में से कोई भी सीरीज नहीं जीती है इसलिए भारत को हराने का ये मौका है। वहीं जूलियन ने आगे

कहा कि, मुझे लगता है कि भारत बल्लेबाजी क्रम में संघर्ष करने जा रहा है और मुझे लगता है कि जैसा कि मैंने कहा कि हम उन्हें पहले टेस्ट मैच में 4 दिनों में हरा देंगे। आपको शुरू में ही उन पर दबाव बनाना होगा और आपको आक्रामक होना होगा। मुझे लगता है कि भारत के पास अनुभव है, उनके पास सबकुछ है, लेकिन न्यूजीलैंड के खिलाफ सीरीज के बाद वे पर्थ में लगातार चौथा मैच हार सकते हैं, फिर वे गुलाबी गेंद से टेस्ट मैच खेलने जाएंगे, जो पहले भी उनके लिए परेशानी का सबब था और फिर आप गाबा जाएंगे। इसलिए ये हमारे लिए भारत को हराने का आदर्श समय है, इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे बहुत दबाव के साथ मैदान में उतरेंगे।

मैच औ सीरीज में क्या कुछ हो सकता है? इस पर बात करते हुए ब्रैंड जूलियन ने आगे कहा कि, उन्हें रोहित शर्मा की जगह लेने के लिए एक सलामी बल्लेबाज को भई चुनना होगा, इसलिए ऐसे संकते हैं कि हमें वहां बहुत अच्छे फॉर्म के साथ जाना चाहिए।

हमारी गेंदबाजी अच्छी लग रही है, हां हमारी बल्लेबाजी थोड़ी डगमगा रही है।

डब्ल्यूएसीए में प्रैक्टिस करते नजर आए विराट

नई दिल्ली (एजेंसी)। पर्थ के वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम पर टीम इंडिया ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच मैचों की टेस्ट सीरीज की तैयारी जमकर कर रही है। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच सीरीज का पहला टेस्ट पर्थ में खेला जाना है। डब्ल्यूएसीए स्टेडियम को चारों तरफ से नेट्स से कवर कर दिया गया और ऐसे में लोगों को प्रैक्टिस सेशन देखने का मौका नहीं मिल रहा है। लेकिन विराट कोहली और जसप्रीत बुमराह की प्रैक्टिस का एक वीडियो सोशल मीडिया पर लीक हो गया है। वहीं इस वीडियो में विराट कोहली पेस अटैक का सामना करते नजर आ रहे हैं। वहीं जसप्रीत बुमराह ने भी जमकर नेट्स पर गेंदबाजी की है। इस वीडियो में शुभमन गिल और सरफराज खान साथ में बैठे भी दिख रहे हैं। ंसीरीज का पहला टेस्ट मैच 22 नवंबर से खेला जाना है। टीम इंडिया इस टेस्ट सीरीज के शुरू होने से करीब दो हफ्ते पहले ऑस्ट्रेलिया पहुंची। टीम ने हाल में न्यूजीलैंड के खिलाफ घर में टेस्ट सीरीज 0-3 से गंवाई। जिसके बाद ये टेस्ट सीरीज भारतीय टीम के लिए और ज्यादा अहम हो गई है। दरअसल, टीम इंडिया को आईसीसी वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में पहुंचना है, तो उसे ये सीरीज कम से कम 4-0 के अंतर से जीतनी होगी, जिसके बाद वह बाकी किसी टीम के ऊपर निर्भर हुए फाइनल में पहुंच जाएगी।

मोहम्मद शमी ने काटा गदर, मध्य प्रदेश के बल्लेबाजों पर कहर बनकर टूटे

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया के अनुभवी गेंदबाज मोहम्मद शमी ने रणजी ट्रॉफी मुकाबले में गुरुवार को बंगाल के लिए चार विकेट चटकाए। इंदौर के होल्कर स्टेडियम में चल रहे रणजी ट्रॉफी 2024-25 एलीट ग्रुप सी मैच में शमी ने मध्य प्रदेश की बल्लेबाजी इकाई की कमर तोड़कर रख दी। उन्होंने 19 ओवर में 54 रन देकर 4 विकेट अपने नाम किए। शमी की शानदार गेदंबाजी के बदौलत 1 विकेट के नुकसान पर 106 रन बनाने वाली मध्य प्रदेश की टीम ने 61 रन पर 9 विकेट गंवाए।

गेंद के साथ शमी के शानदार प्रदर्शन की बदौलत बंगाल ने मेजबानी टीम को 59 ओवर में 167 रन पर आउट करने और 61 रनों की बड़ी बढ़त हासिल कर ली। शमी ने पहले दिन के खेल के तीसरे सत्र में बंगाल के लिए 10 ओवर फेंके, लेकिन विकेट लेने में नाकाम रहे। हालांकि, गुरुवार को उनका प्रदर्शन कुछ अलग ही रहा। उन्होंने अपनी टीम को मैच में शानदार वापसी करने में मदद की।

ंशमी ने दूसरे दिन सबसे पहले मध्य प्रदेश के कप्तान शुभम शर्मा को आउट किया। फिर ऑलराउंडर सारांश जैन को आउट किया। इसके बाद उन्होंने कुमार कार्तिकेय और कुलवंत खेजरोलिया को पवेलियन भेजा। कुमार कार्तिकेय ने 9 रन बनाए और कुलवंत खेजरोलिया खाता भी नहीं खेल पाए। शमी के भाई मोहम्मद कैफ ने 2 विकेट लिए। इसके अलावा सूरज संधू जायसवाल ने 2 और रोहित कुमार ने 1 विकेट अपने नाम किया।

विराट कोहली हो सकते हैं इस खास क्लब में शामिल, रोहित शर्मा के सामने गौतम गंभीर का रिकॉर्ड

नई दिल्ली (एजेंसी)। विराट कोहली और रोहित शर्मा बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले भारतीय खिलाड़ियों में शामिल हैं। हालांकि, ये दोनों खिलाड़ी पहले नंबर पर नहीं है, दोनों ने अब तक ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 2 मैच खेले हैं। 24 मैचों में उन्होंने 48.26 के औसत से 1979 रन बनाए हैं। वह इस बार 2000 रन बनाने वालों के क्लब में शामिल हो जाएंगे। भारत की ओर से सचिन तेंदुलकर, वीवीएस लक्ष्मण, राहुल द्रविड़ और चेतेश्वर पुजारा ये काम कर चुके हैं। कोहली 2000 के आंकड़े से केवल 21 रन दूर है। कोहली पर्थ टेस्ट में ही ये कारनामा कर सकते हैं। वहीं वह चेतेश्वर पुजारा से भी केवल 54 रन दूर हैं। पुजारा भारत और ऑस्ट्रेलिया टेस्ट सीरीज में सबसे ज्यादा रन बनाने के मामले में चौथे स्थान पर है।

वहीं रोहित शर्मा की नजर भी इस सीरीज में खास चीज पर होगी। रोहित शर्मा ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 11 टेस्ट मैच खेले जिसमें उन्होंने 650 रन बनाए हैं। भारत की ओर से ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सबसे ज्यादा टेस्ट रन बनाने के मामले में वह गौतम गंभीर से पीछे हैं। गंभीर ने 673 रन बनाए हैं। रोहित 14 रन बनाकर टीम इंडिया के हेड कोच से आगे निकल जाएंगे।

तकनीक पर काम कर खेल में सुधार करें- ब्रेट ली की रोहित और कोहली को सलाह

सिडनी (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व तेज गेंदबाज ब्रेट ली ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ शुरू होने वाली पांच मैचों की श्रृंखला से पहले भारत के कप्तान रोहित शर्मा और दिग्गज बल्लेबाज विराट कोहली को सलाह दी है कि वे अपनी तकनीक पर काम करने के साथ रीसेट बटन (पहले की तरह लय हासिल करें) दबाएं। बॉर्डर-गावस्कर टेस्ट श्रृंखला का आगाज पर्थ में 22 नवंबर से होगा। न्यूजीलैंड के खिलाफ तीन मैचों की हालिया टेस्ट श्रृंखला में लचर प्रदर्शन के बाद इन दोनों बल्लेबाजों के ऑस्ट्रेलिया में पांच मैचों की श्रृंखला में प्रदर्शन पर नजर रहेगी। न्यूजीलैंड ने भारत को 3-0 से शिकस्त दी थी। ली ने एक 'यूट्यूब चैनल' पर कहा, '' जब आप एक के बाद एक खराब प्रदर्शन करते हैं, तो दबाव बढ़ जाता है। इसलिए, मुझे लगता है कि अब बात यह

है कि विराट कोहली और रोहित शर्मा जैसे खिलाड़ी को फिर से कड़ा अभ्यास करना होगा।'' उन्होंने कहा, '' वे चैम्पियन खिलाड़ी है क्योंकि वे मूल चीजों को दूसरे से बेहतर तरीके से करते है। उन्हें बस फिर से लय हासिल करने की जरूरत है।'' ली ने कहा कि ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज नयी गेंद से रोहित और कोहली के खिलाफ आक्रामक रूख अपनायेंगे ऐसे में इन दोनों को इससे निपटने का तरीका ढूंढना होगा। उन्होंने कहा, '' (उन्हें) अपनी तकनीक पर काम करना चाहिए, तरोताजा होना चाहिए, जितना हो सके क्रिकेट से दूर रहना चाहिए और फिर ऑस्ट्रेलिया पहुंच कर पूरा अभ्यास करना चाहिये। मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं कि ऑस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज नई गेंद से रोहित के खिलाफ बेहद आक्रामक रवैया अपनायेंगे।'' रोहित ने इस साल 11 टेस्ट में 29.40 की औसत से 588 रन बनाये है जबकि कोहली ने छह टेस्ट में 22.72 की औसत से सिर्फ 250 रन बनाये हैं। ली ने हालांकि माना कि रोहित की बल्लेबाजों के प्रदर्शन में गिरावट का एक कारण तेजी से रन बनाने की कोशिश करना भी है। उन्होंने कहा, '' मैं यह नहीं कह सकता कि उनकी बल्लेबाजी में तकनीकी खराबी है या नहीं। मैं उन्हें पिछले एक दशक से देख रहा हूं। मेरा मानना है कि वह मौजूदा समय में सबसे अच्छा पुल शॉट खेलते है, शायद वह थोड़ा आक्रामक रूख अपना रहे हैं।

जिला बाल कल्याण एवं संरक्षण समिति की बैठक संपन्न

बाल भिक्षावृत्ति की रोकथाम के लिए गठित टीम शहर का भ्रमण कर अभिभावकों को समझाइश देकर इसे पूर्णत: रोके

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर प्रतिभा पाल की अध्यक्षता में जिला बाल कल्याण एवं संरक्षण समिति की बैठक संपन्न हुई। बैठक को संबोधित करते हुए कलेक्टर ने निर्देश दिए कि बाल भिक्षावृत्ति की रोकथाम के लिए गठित टीम शहर का भ्रमण करे तथा बाल भिक्षावृत्ति करवाने वाले अभिभावकों को समझाइश देकर इसको पूर्णतः रोके। कलेक्टर ने बाल सम्प्रेषण गृह में सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने तथा नियमित तौर पर चिकित्सक की उपस्थिति के निर्देश दिए।

कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में आयोजित बैठक में कलेक्टर ने कहा कि बाल सम्प्रेषण गृह में बच्चों को आईटीआई के माध्यम से प्रशिक्षण देने के लिए आवश्यक टूलकिट व अन्य प्रशिक्षण सामग्री उपलब्ध कराएं ताकि बच्चों को कौशल प्रशिक्षण दिलाया जा सके। उन्होंने बाल संप्रेषण गृह में खेल गतिविधियों के संचालन के भी निर्देश दिए। बैठक में बाल कल्याण समिति की अध्यक्ष डॉ मीना मिश्रा ने सुझाव दिया कि प्रत्येक थाने में पुलिस बाल कल्याण अधिकारी नामांकित रहें। इस अवसर पर सहायक संचालक आशीष द्विवेदी ने बताया कि स्पांशरशिप में 10 बच्चों को लिया गया है तथा हरि बाल गृह में वर्तमान समय में 9 बच्चे निवासरत हैं तथा बाल कल्याण समिति के समक्ष 15 प्रकरण लंबित है। कलेक्टर ने लंबित प्रकरणों के निराकरण को प्राथमिकता देने की बात कही। बाल संरक्षण हेतु विभागीय समन्वय के संबंध में आयोजित बैठक में एडिशनल एसपी अनिल सोनकर, जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास प्रतिभा पाण्डेय, संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय अनिल दुबे सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी तथा पुलिस विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे।

उप मुख्यमंत्री पहुंचे चित्रकूट, श्रीमद भागवत कथा ज्ञान यज्ञ में हुये शामिल

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल आचार्य आश्रम चित्रकूट धाम पहुंचकर बैकुंठवासी राजगुरु संकर्षण प्रपन्ना रामानुजाचार्य जी महराज की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया तथा गुरूपूजा की। उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने आचार्य आश्रम में राजगुरु स्वामी बदरी प्रपन्नाचार्य जी महाराज से भेट कर आशीर्वाद लिया। उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने चित्रकूट धाम में आचार्य आश्रम में चल रही श्रीमद भागवत कथा ज्ञान यज्ञ में शामिल होकर कथा का श्रवण किया।

आयुष्मान भारत योजना स्वास्थ्य क्षेत्र में क्रांति, मिला सुरक्षा चक्र

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि आयुष्मान भारत योजना स्वास्थ्य क्षेत्र में क्रांति है, जो गरीबों और वंचितों के लिए गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा सुनिश्चित कर रही है। इस योजना से आम नागरिकों को स्वास्थ्य सुरक्षा मिल रही है, सटग ही राज्य के स्वास्थ्य ढांचे को मजबूत बनाने में भी योजना सहायक सिद्ध हो रही है। उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने कहा कि आयुष्मान भारत योजना ने गरीब परिवारों को उनकी बीमारी के इलाज के लिए एक नया संबल प्रदान किया है। इससे स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार हो रहा है और राज्य में स्वास्थ्य के क्षेत्र में बुनियादी ढांचे का विस्तार हो रहा है, जो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की समग्र स्वास्थ्य देखभाल के लक्ष्य को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने कहा कि आयुष्मान भारत योजना के माध्यम से आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को गंभीर और सामान्य बीमारियों का निःशुल्क उपचार मिल रहा है। इस योजना के तहत गरीब और मध्यम वर्गीय परिवारों को प्रति वर्ष 5 लाख रुपये तक का निःशुल्क उपचार प्रदान किया जा रहा है, जिससे उनके जीवन में स्वास्थ्य और सुरक्षा का संचार हो रहा है।

उमरिया जिले के करकेली जनपद पंचायत के ग्राम बड़ागांव निवासी सु रानी कोल को कैंसर बीमारी से लड़ने में आयुष्मान भारत योजना ने संबल प्रदान किया। रानी कोल को जब गंभीर बीमारी कैंसर का पता चला, तो उनका परिवार इलाज के लिए परेशान हो गया। आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण इलाज कराना उनके लिए असंभव सा लग रहा था। आयुष्मान योजना से रानी कोल का सफल इलाज हुआ और आज वे पूरी तरह स्वस्थ हैं। उनके परिवार ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी को इस योजना के लिए धन्यवाद दिया और कहा कि आयुष्मान भारत योजना उनके जैसे लाखों गरीब परिवारों के लिए वरदान साबित हो रही है।

पूर्व सैनिकों की राज्य स्तरीय रैली में सम्मान के साथ गिया गया समाधान

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कृष्णा राजकपूर आडिटोरियम में गुरुवार को पूर्व सैनिकों की राज्य स्तरीय रैली का आयोजन किया गया। जहां पूर्व सैनिकों एवं वीरनारियों को सम्मानित किया गया साथ ही उनकी समस्याओं का समाधान किया गया। जिला सैनिक कल्याण अधिकारी सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट कर्नल पी गंगा ने बताया कि रैली में रीवा, मऊगंज, सीधी, सिंगरौली, सतना एवं मैहर जिलों के पूर्व सैनिक व वीरनारियाँ शामिल हुईं।

अजगरहा गांव से लापता हुई बच्ची का शव पुलिस ने बरामद किया

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। अजगरहा गांव में बुधवार दोपहर से लापता हुई बच्ची का शव पुलिस ने बरामद किया है। काफी खोजबीन के बाद परिजनों ने गुमशुदगी की शिकायत विश्वविद्यालय थाने में दर्ज कराई गई थी। पुलिस के आला अधिकारी भी इस मामले पर नज़र बनाए हुए थे। आसपास के थानों में भी सूचना दी गई थी। पुलिस निरंतर बच्ची की तलाश कर रही थी। इसी बीच बच्ची का शव गांव के ही एक पानी से भरे गड्ढे से बरामद किया गया है। बताया जा रहा है कि अजगर निवासी रिंकू यादव की दो वर्षी मासूम बच्ची अपने घर से उस वक्त लापता हुई थी जब घर में कोई नहीं था।

आरडीसीए में मनाया गया बालदिवस

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। आरडीसीए द्वारा स्टेडियम में बालदिवस मनाया। इस दौरान बच्चों को पंडित जवाहरलाल नेहरू के बारे में बताया साथ ही देश की आज़ादी और देश के विकास में पंडित नेहरू के योगदान के बारे में जानकारी दी। बालदिवस पर बच्चो को चॉकलेट और फल वितरित किया गया।

विवादों में घिरी मऊगंज पुलिस, भाजपा नेता से अभद्रता का आरोप

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मऊगंज पुलिस एक बार फिर विवादों में घिर गई। बुधवार रात मऊगंज थाने में उस वक्त हड़कंप मच गया। जब थाना प्रभारी और भाजपा ज़िला उपाध्यक्ष के बीच नोक झोक के बाद बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता सहित अधिवक्ता थाने में पहुंच गए। थाना प्रभारी पर ज़िला उपाध्यक्ष से अभद्रता करने का आरोप लगाते हुए कार्वाई की मांग पर अड़ गए। आरोप है कि किसी मामले को लेकर भाजपा ज़िला उपाध्यक्ष थाना पहुंचे थे जहां थाना प्रभारी ने उनके साथ अभद्रता करते हुए कॉलर पकड़ कर घसीटने का प्रयास किया। इस बात को लेकर भाजपा कार्यकर्ताओं सहित अधिवक्ताओं का आक्रोश भड़क उठा और उन्होंने थाने का घेराव कर थाना प्रभारी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। फिलहाल मामले में मऊगंज एस पी रचना ठाकुर ने आक्रोशित लोगों को मामले की जांच करा कार्रवाई का आश्वासन दिया है।

संजय गांधी अस्पताल में उपचार के दौरान मासूम बच्चे की मौत

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। संजय गांधी अस्पताल में एक बच्चे की उपचार के दौरान मौत हो गई। जिसके बाद परिजनों ने जमकर हंगामा किया। परिजनों का आरोप था कि इलाज में लापरवाही बरतने के कारण बच्चे की मौत हुई हैं। इस बात की जानकारी लगने के बाद अस्पताल प्रबंधन मौके पर पहुंचा और परिजनों को समझाइश देने का प्रयास किया। परिजनों ने आरोप लगाया कि मामूली सर्दी जुकाम होने पर बच्चे को अस्पताल लेकर आये थे। जहां कोई भी सीनियर चिकित्सक मौजूद नहीं था। जूनियर डॉक्टर बच्चे का इलाज कर रहे थे, उपचार में लापरवाही से बच्चे की मौत हो गई।

ट्रांसफार्मर एवं बिल वसूली को लेकर ग्रामीणों का धरना

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। ट्रांसफार्मर एवं बिल वसूली को लेकर ग्रामीण धरने पर बैठ गए हैं। जिले के विद्युत वितरण केंद्र मनगवां अंतर्गत ग्राम बुढवा में ट्रांसफार्मर विगत कई महीनों से जला हुआ है। ट्रांसफार्मर बदलने के नाम पर ज़बरदस्ती लोगों से बिल भी जमा करवा लिया गया। लेकिन ट्रांसफार्मर नहीं बदला गया। विभाग द्वारा लगातार ग्रामीणों को झांसा दिया जा रहा है। ट्रांसफार्मर खराब होने से किसानों को काफी नुकसान हुआ। विधायक एवं जनपद अध्यक्ष के द्वारा भी विभाग के लोगों को कई बार कहा गया, लेकिन विद्युत वितरण केंद्र तानाशाही रवैया अपना रहा है। जिसके चलते अब ग्रामीण धरना प्रदर्शन करने को मजबूर हैं।

निर्माणाधीन भवन की तीसरी मंजिल से गिरकर कारीगर की मौत

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। समान थाना क्षेत्र के जिउला में भवन निर्माण के दौरान तीन मंज़िला इमारत से गिरने के कारण एक कारीगर की मौत हो गई। घटना उस वक्त हुई जब कारीगर काम कर रहा था और पैर फिसल जाने के कारण वो नीचे गिर गया। मौके पर मौजूद श्रमिकों ने उसे अस्पताल पहुंचाया,जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक की पहचान लोही निवासी राम बहोर के रूप में हुई है। घटना को लेकर परिजनों ने ठेकेदार पर गंभीर आरोप लगाए हैं। बताया जा रहा है कि मृतक ठेकेदार रामनिवास साहू के अंडर में काम कर रहा था। परिजनों का आरोप है कि बिना सुरक्षा इंतज़ाम के तीन मंज़िला इमारत में काम कराया जा रहा था।

कलेक्टर ने मार्तण्ड उत्कृष्ट विद्यालय परिसर स्थित जर्जर भवन का किया निरीक्षण

आगामी एक सप्ताह के अंदर भवन को गिराने की कार्यवाही करने के निर्देश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने शासकीय मार्तण्ड उत्कृष्ट विद्यालय परिसर में जर्जर भवन का मौके पर निरीक्षण करते हुए अधिकारियों को निर्देश दिए कि आगामी एक सप्ताह के अंदर भवन को गिराने की कार्यवाही सुनिश्चित कराएं। उन्होंने कहा कि भवन को गिराकर समतल स्थान बनाएं ताकि कार्ययोजना के अनुसार आवश्यक निर्माण कराया जा सके। इस दौरान एसडीएम हुजूर वैशाली जैन, तहसीलदार शिवशंकर शुक्ला, संयुक्त संचालक शिक्षा एसके त्रिपाठी, जिला शिक्षा अधिकारी सुदामालाल गुप्ता सहित निर्माण विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे।

रोजगार मेला 20 को 8 कंपनियों द्वारा किया जाएगा युवाओं का चयन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शासकीय आदर्श विज्ञान महाविद्यालय रीवा में 20 नवम्बर को प्रातः 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक रोजगार मेला आयोजित किया गया है। रोजगार मेला मध्यप्रदेश संकल्प योजना के तहत आयोजित किया जा रहा है, जिसमें जिले के बेरोजगार युवक-युवतियों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाएंगे। इस संबंध में उप संचालक रोजगार अनिल दुबे ने बताया कि रोजगार मेले में 8 कंपनियों एवं नियोजकों द्वारा युवाओं का चयन किया जाएगा। मेले में शामिल होने के लिए विभिन्न कंपनियों हेतु युवक एवं युवतियों की आयु सीमा 18 से 48 वर्ष के बीच निर्धारित की गई है। आयु सीमा विभिन्न कंपनियों में अलग-अलग होगी। वेतन एवं भत्ते 6000 रुपए से 25 हजार रुपए तक निर्धारित किया गया है। युवाओ को अपने साथ मूल अंकसूची तथा निवास प्रमाण पत्र की छायाप्रति, आधार कार्ड या वोटर आईडी, रोजगार कार्यालय का जीवित पंजीयन एवं नवीनतम दो पासपोर्ट साइज के फोटो लेकर आना अनिवार्य होगा।

उप संचालक ने बताया कि रोजगार मेले में बोनटन टेक्नोमेक फर्नीचर प्रा. लि. इंदौर, द ई पाई डाट काम (हावेल्स सोलर प्लांट) रीवा, ग्रो फास्ट एग्रोटेक प्रा. लि. रीवा, स्वतंत्र माइक्रोफिन प्रा. लि. भोपाल, प्रगतिशील बायोटेक रीवा, प्रगतिशील एग्रोटेक रीवा तथा एचडीएफसी लाईफ इंश्योरेन्स लि. तथा भारतीय जीवन बीमा निगम रीवा में रोजगार के अवसर उपलब्ध रहेंगे।

पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के लिए लगाया गया शिविर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शासन की महत्वाकां ''पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना'' की जानकारी उपभोक्ताओं को देने के लिए अमहिया स्थित पावर हाउस परिसर में विशेष शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में अधीक्षण अभियंता वृत्त रीवा एवं कार्यपालन अभियंता शहर बीके शुक्ला की उपस्थिति में घरेलू विद्युत उपभोक्ताओ ने विषेश रूचि लेते हुए भाग लिया। इस अवसर पर सोलर रूफटाप का डेमो प्रदर्शित किया। अधीक्षण अभियंता ने उपभोक्ताओं को इस योजना का लाभ लेकर सब्सिडी, विद्युत बिल में बचत तथा पर्यावरण की स्वच्छता में सहयोग की अपील की। शिविर में 104 विद्युत उपभोक्ताओं ने पंजीयन कराया। इसी प्रकार जिले के सभी विद्युतवितरण केन्द्रो में भी शिविर आयोजित कर उपभोक्ताओ को ''पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना'' के बारे में जानकारी दी गई।

औद्योगिक विवाद के प्रकरणों का रीवा श्रम न्यायालय में होगा निराकरण

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। तीन औद्योगिक विवाद के प्रकरणों का निराकरण श्रम न्यायालय रीवा द्वारा किया जाएगा। इस संबंध में अपर आयुक्त श्रम कार्यालय इंदौर ने बताया है कि आद्योगिक विवाद के प्रकरण श्रम न्यायालय रीवा को सौंप दिए गए हैं। अपर आयुक्त द्वारा जारी तीन अलग-अलग आदेशों के अनुसार आवेदक राघवेन्द्र पिता शम्भू प्रसाद पाण्डेय तथा प्रबंधक जयप्रकाश एसोसिएट्स लिमिटेड रीवा और प्रबंधक विजय कंस्ट्रक्शन कंपनी जेपी रीवा के मध्य औद्योगिक विवाद है, जिसके निराकरण के लिए श्रम न्यायालय रीवा को प्रकरण सौंपा गया है।

जनजातीय गौरव दिवस आज

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जनजातीय गौरव दिवस 15 नवम्बर को मनाया जा रहा है। जनजातीय गौरव दिवस के उपलक्ष्य में धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान अंतर्गत जनजातीय समुदाय को व्यक्तिगत हितलाभ प्रदान करने के उद्देश्य से विभिन्न गतिविधियों का आयोजन 26 नवम्बर तक कैंप आयोजित कर किया जाएगा। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने जिले में आदिवासी संस्कृति के संरक्षण, जागरूकता और सम्मान बढ़ाने के प्रयास के तहत हितग्राही मूलक गतिविधियों के आयोजन के निर्देश दिए हैं। जनजातीय दिवस पर 15 नवम्बर को आदिवासी नायकों को सम्मानित करने के लिए मुख्य कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। उन्नत ग्रामों में ग्रामसभा के साथ ही आधार कार्ड कैंप व जागरूकता रैली का आयोजन होगा।

राम जन्मभूमि मंदिर अयोध्या के लिए तिरूपति से रवाना रथयात्रा आज पहुंचेगी रीवा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। राम जन्मभूमि मंदिर अयोध्या में राम महायंत्र (108 किलो गोल्ड प्लेटेड) की स्थापना की जाएगी। इस महायंत्र को विशाल रथयात्रा द्वारा तिरूपति से अयोध्या पहुंचाया जा रहा हैं। तिरूपति से रवाना हुई रथयात्रा 15 नवम्बर को शाम 4 बजे रीवा पहुंचेगी। चोरहटा बायपास गुरूकुल स्कूल मोड़ में रथयात्रा का स्वागत किया जाएगा। रथयात्रा ढेकहा तिराहा, जयस्तंभ, स्टेच्यू चौराहा, अस्पताल चौराहा, बिछिया होते हुए लक्ष्मणबाग पहुंचेगी। लक्ष्मणबाग संस्थान में ही राम महायंत्र के श्रद्धालुजन दर्शन कर सकेंगे। अगले दिन 16 नवम्बर को रथयात्रा प्रातः 10 बजे लक्ष्मणबाग से प्रस्थान कर रायपुर, मनगवां, चाकघाट होते हुए उत्तरप्रदेश की सीमा में प्रवेश करेगी। जिले की धर्मपरायण जनता से रथयात्रा के स्वागत, पूजा-आरती कार्यक्रम में शामिल होने की अपील की गई है। कार्यक्रम में साधु-संत, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक संगठनों के प्रतिनिधि तथा जनप्रतिनिधिगण उपस्थित रहेंगे।

राजस्व महाअभियान 15 से 15 दिसम्बर तक चलाया जाएगा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शासन के निर्देशों के अनुसार 15 नवम्बर से 15 दिसम्बर तक राजस्व महाअभियान-3 चलाया जाएगा। अभियान के तहत नामांतरण, बंटवारा, सीमांकन, अभिलेखों में सुधार तथा नक्शा तरमीम के प्रकरणों का निराकरण किया जाएगा। अभियान के दौरान प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, स्वामित्व योजना तथा अन्य राजस्व कार्यों के प्रकरणों का भी निराकरण किया जाएगा। प्रत्येक गांव में बी-1 का वाचन अनिवार्य रूप से होगा तथा बी-1 के वाचन के समय राजस्व निरीक्षक अनिवार्य रूप से उपस्थित रहेंगे। अभियान के दौरान कलेक्टर, अपर कलेक्टर तथा एसडीएम राजस्व न्यायालयों का निरीक्षण करके प्रतिवेदन प्रस्तुत करेंगे। निरीक्षण के दौरान अभियान के लिए निर्धारित सभी बिन्दुओं पर कार्यवाही सुनिश्चित की जायेगी। सभी जनप्रतिनिधियों को भी अभियान की पूरी जानकारी देने के निर्देश दिये गये हैं। रीवा संभाग के सभी जिलों में नक्शा तरमीम के प्रकरण बड़ी संख्या में लंबित हैं। इनके निराकरण के लिए विशेष प्रयास किया जायेगा। साथ ही नक्शा तरमीम, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के शेष प्रकरणों में आधार सीडिंग एवं स्वामित्व योजना में पात्र हितग्राहियों को आवासीय पट्टे जारी करने की कार्यवाही भी किये जाने के निर्देश दिये गये हैं। अभियान के दौरान अभिलेखों में सुधार, खसरे के अनुसार नक्शे में बटांकन दर्ज करने के प्रकरण निराकृत किये जायेंगे। अभियान के दौरान प्रत्येक भू स्वामी के खसरे नम्बर से आधार संख्या की सीडिंग कराई जायेगी। किसान पोर्टल पर स्वयं आधार सीडिंग कर सकता है। इसका सत्यापन पटवारी से कराएं। संभाग के सभी तहसीलों में निर्धारित अवधि में प्रत्येक पटवारी हल्के में शिविर लगाकर बी-1 का वाचन कराएं। बी-1 के वाचन से प्राप्त फौती नामांतरण के प्रकरण दर्ज कर उनका अभियान के दौरान निराकरण किये जाने के निर्देश दिये गये है।

भगवान बिरसा मुण्डा की जयंती पर होंगे विभिन्न कार्यक्रम

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। भगवान बिरसा मुण्डा की 150वीं जयंती 15 नवम्बर को जिले भर में जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाई जाएगी। इस क्रम में जिले भर में 15 से 26 नवम्बर तक विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने जिला शिक्षा अधिकारी, कुलसचिव अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय तथा अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा को शासन के निर्देशों के अनुरूप कार्यक्रमों के आयोजन के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा है कि सभी शिक्षण संस्थाओं तथा छात्रावासों में भाषण, लोकनृत्य, संगोष्ठी, रैली तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता जैसे आयोजन करके भगवान बिरसा मुण्डा के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालें। जनजातीय गौरव दिवस पर आदिवासी लोकनृत्य, लोकगीत तथा लोकनाट्य के भी आयोजन करें।

भगवान बिरसा मुण्डा की जयंती पर आज विशेष ग्राम सभाओं का होगा आयोजन: भगवान बिरसा मुण्डा की 150वीं जयंती के अवसर पर 15 नवम्बर को धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत जिले की 424 ग्राम पंचायतों में विशेष ग्राम सभाओं का आयोजन किया जाएगा। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने बताया कि पीएम जनमन अभियान के आधार पर 18 विभिन्न विभागों की 25 योजनाओं का शत-प्रतिशत सेचुरेशन किया जाकर समृद्ध ग्राम की अवधारणा पर आधारित गतिविधियों का क्रियान्वयन किया जाएगा। घरेलू एवं सामुदायिक बुनियादी संरचनाएं, स्वास्थ्य एवं पोषण, शिक्षण एवं प्रशिक्षण, विद्युतीकरण, आर्थिक सशक्तिकरण तथा कनेक्टिविटी आलवेदर गतिविधि की कार्ययोजना तैयार कर विशेष ग्राम सभा में अनुमोदन कराया जाएगा।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।